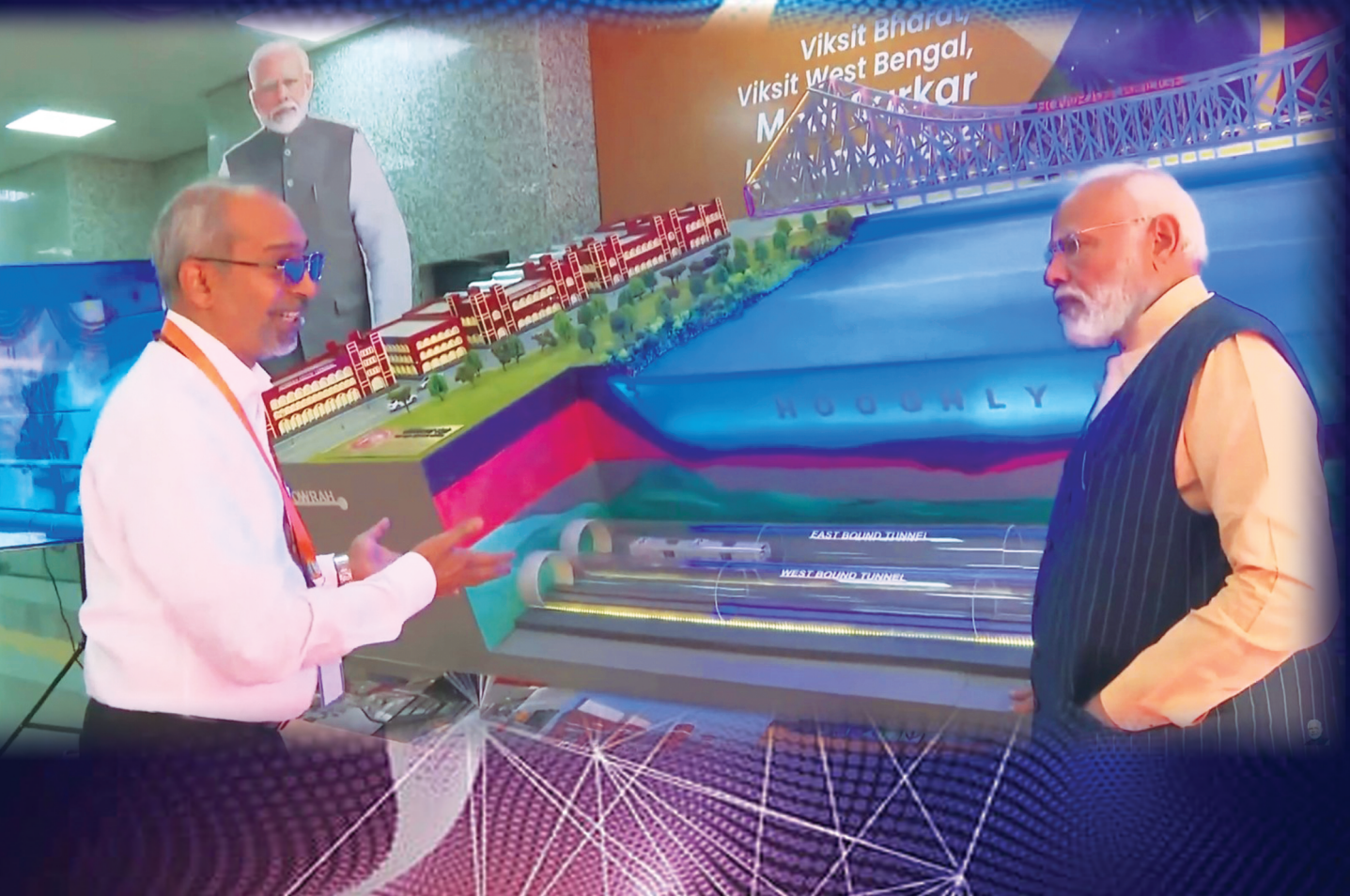




मेट्रो चेतना

संयुक्तांक - 33 एवं 34



मेट्रो रेलवे, कोलकाता

मेट्रो चेतना

संयुक्तांक - 33 एवं 34

संरक्षक

पी. उदय कुमार रेड्डी

परामर्शदाता

संजय विश्वास
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर

संपादक

किरण बोस
राजभाषा अधिकारी

सहयोग

कीर्ति किरण बागे, व.अनुवाद अधिकारी
राजेश एक्का, व.अनुवाद अधिकारी
शांतनु नाथ, कनिष्ठ अनुवादक
मानसिंह मेलगंडी, नि.स.-॥

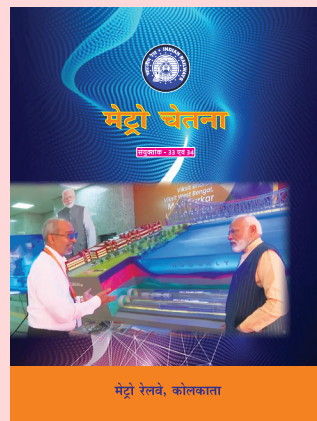
सम्पर्क

राजभाषा अनुभाग
मेट्रो रेलवे
मेट्रो रेल भवन (नवम तल)
33/1, जवाहर लाल नेहरू रोड
कोलकाता - 700 071
(020) 55735, 55037 (रेलवे)
(033) 225 55735, 225 55037 (पी. एंड टी.)
ई-मेल- rajbhashametro@gmail.com

केवल निःशुल्क वितरण हेतु प्रकाशित पत्रिका। इसमें प्रकाशित
रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक/रचनाकारों के अपने हैं।
संपादक मंडल इसके लिए जिम्मेवार नहीं है

अनुक्रमणिका

➤ महाप्रबंधक का संदेश		1
➤ सम्पादकीय		2
➤ मेट्रो समाचार		3-4, 33-35
➤ कुछ दाग अच्छे होते हैं	रूपा भट्टाचार्य	5-6
➤ लोक गीतों में 'गारी' (गाली)	संगीता कुमार	7-8
➤ इक ख्वाहिश...	श्रीमती रत्ना गर्ग	8
➤ भरमाती, चकाचौंध करती दुनिया विज्ञापनों की	अलका सिंह	9-10
➤ चुनाव	ऋचा पराशर अम्बष्टा	10
➤ खबरों की अनोखी दुनिया	किरण बोस	11-13
➤ भोलाराम का जीव	हरिशंकर परसाई	14-16
➤ भारत में महिला समानता	कीर्ति किरण बागे	17-18
➤ "इस विश्वास में मैं जीना और मरना चाहता हूँ"	राजेश एक्का	19-22
➤ चाय पर चर्चा	शांतनु नाथ	23-25
➤ एक यात्रा विस्टाडोम से	दिलीप कुमार दास	26-27
➤ निद्रा	मानसिंह मेलगंडी	28
➤ गज़ल सम्राट - पंकज उधास	रंजीत कुमार सिन्हा	29
➤ निखर-निहार-निहाल अयोध्या	अशोक कुमार पाण्डेय	30
➤ साईं नगर शिरडी की यात्रा	पेडडा ममता राव	31-32
➤ हिन्दी के हस्ताक्षर		36
➤ नन्हीं कूची		37



आवरण पृष्ठ

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिनांक 06.03.2024 को बहुप्रतीक्षित हावड़ा मैदान - एस्प्लानेड खंड का उद्घाटन

पी.उदय कुमार रेड्डी
महाप्रबंधक



महाप्रबंधक कार्यालय
मेट्रो रेल भवन,
33/1, ज.ला.नेहरू रोड
कोलकाता-700071

महाप्रबंधक का संदेश



भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के इतिहास में हिंदी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस देश के अभ्युत्थान के साथ संस्कृत, पाली, अपभ्रंश, उर्दू, हिंदवी एवं खड़ी बोली के एक लंबे सफर के बाद कार्यालयीन कार्यों की भाषा हिंदी इसका सहज सरल एवं निश्चित रूप से एक सशक्त संपर्क माध्यम का आधार प्रदान करने में सक्षम है।

मेट्रो रेलवे का राजभाषा विभाग अपनी हिंदी पत्रिका "मेट्रो चेतना" के 33वें एवं 34वें संयुक्तांक का प्रकाशन कर रहा है। मुझे विश्वास है कि "मेट्रो चेतना" पत्रिका अपने पिछले अंक की भांति इस अंक में भी उम्दा लेखों एवं कहानियों के साथ पाठक वर्ग को राजभाषा से जुड़ने के लिए प्रेरित करेगी।

पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी अधिकारी व कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं। मैं सभी को बधाई देता हूँ तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ,

(पी. उदय कुमार रेड्डी)
महाप्रबंधक



मेट्रो चेतना का एक और नया अंक (संयुक्तांक) आपके समक्ष है। सोशल मीडिया और जन संचार के माध्यम से राजभाषा हिंदी और उसके प्रयोग-प्रसार से सम्बद्ध तमाम संभावनाओं का असीम विस्तार हमारे समक्ष परत दर परत खुल रहा है।

खबरें, विभिन्न विषयों की जानकारी, देश-विदेश की घटनाएं, मनोरंजन, अध्ययन की सामग्री, सबकुछ उंगलियों पर है।

‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ वाक्य अपने सही अर्थों में व्यापकता का पूरा संसार लिए हमारे समक्ष खड़ा है। विदेशों में पढ़ाई, व्यापार, सैर सपाटा सब कुछ बड़ा आसान सा हो गया है।

ऐसे में कार्यालयों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार की महत्ता और बढ़ जाती है।

सरकार द्वारा नई शिक्षा नीति-2020 को लागू करने के लिए प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा का माध्यम मातृभाषा में हो, यह मुहिम चल रही है। साथ ही पूरी तार्किकता के साथ यह तथ्य भी रखा जा रहा है कि इस विशाल देश को एकता के सूत्र में पिरो कर रखा जा सके, इसके लिए राजभाषा हिंदी केन्द्रीय कार्यालयों की ही नहीं बल्कि राष्ट्र की संपर्क भाषा के रूप में, व्यवहार की भाषा के रूप में और अंततः इस देश के समस्त राज्यों द्वारा इस भाषा को इसके पूरे सम्मान और आदर भाव से अपनाने की आवाज उठे, तभी देश की अखंडता और सामासिक संस्कृति का पूरा विकास हो सकेगा।

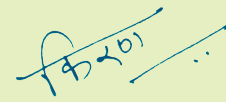
इसी प्रयास की ओर एक और सार्थक कदम है मेट्रो रेलवे की यह पत्रिका “मेट्रो चेतना” ।

इस अंक में कुछ विशेष लेख व रचनाएं हैं - लोक संस्कृति का रस रंग लिए हुए “लोकगीतों में गारी (गाली)” लेख। विज्ञापनों की रंगीन दुनिया का सैर कराती रचना ‘भरमाती, चकाचौंध करती दुनिया विज्ञापनों की’। भारतीय रेल के कोने से आपको रोमांचकारी अनुभव देगा ‘एक यात्रा विस्टाडोम से’। वंदे भारत के बाद विस्टाडोम में यात्रा अपने आप में अनोखा अनुभव होगा। चुनावों के मौसम में ताजातरीन कविता ‘चुनाव’ चुनाव के रंग, मौसम और दायित्व की ओर इंगित करता है।

इसके अलावा स्थायी स्तंभ में माखनलाल चतुर्वेदी की सदाबहार कविता-‘पुष्प की अभिलाषा’ पढ़ना ना भूलिएगा।

आपकी प्रतिक्रियाओं का इंतज़ार रहेगा।

.. शेष अगले अंक में ।


(किरण बोस)

प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के कर कमलों से ईस्ट-वेस्ट मेट्रो के हावड़ा मैदान-एस्प्लानेड खंड और अन्य मेट्रो कॉरिडोर का उद्घाटन

भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिनांक 06.03.2024 को ईस्ट-वेस्ट मेट्रो के बहुप्रतीक्षित हावड़ा मैदान से एस्प्लानेड विस्तार खंड (4.8 किमी) का उद्घाटन नवनिर्मित एस्प्लानेड मेट्रो स्टेशन से किया गया। प्रधान मंत्री ने ऑरेंज लाइन के कवि सुभाष-हेमंत मुखोपाध्याय विस्तार खंड (5.4 किमी) और पर्पल लाइन के विस्तारित तारातला - माझेरहाट खंड (1.25 किमी) का भी उद्घाटन किया।



उद्घाटन के बाद श्री मोदी ने इन तीन मार्गों पर पहली मेट्रो सेवा को हरी झंडी दिखाई। उन्होंने एस्प्लानेड से हावड़ा मैदान और वापस एस्प्लानेड तक मेट्रो में यात्रा भी की। इस मेट्रो यात्रा के दौरान वे स्कूली बच्चों, मजदूरों और इन परियोजनाओं से जुड़े इंजीनियरों के साथ बैठे और उनसे बातचीत की। उन्होंने उनसे कोलकाता मेट्रो से उनकी अपेक्षाओं के बारे में पूछा और पहली बार हुगली नदी के नीचे यात्रा करते हुए उनके अनुभवों के बारे में जानकारी ली।

इन परियोजनाओं के उद्घाटन से दक्षिण 24 परगना, हावड़ा, हुगली, मिदनापुर

के दूर-दराज के इलाकों के लोगों को कोलकाता और उसके आसपास बिना किसी ट्रैफिक जाम के और तेज गति से यात्रा करने में मदद मिलेगी।

महाप्रबंधक द्वारा मेट्रो रेल के खिलाड़ियों का सम्मान

मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री पी उदय कुमार रेड्डी ने दिनांक 08.04.2024 को मेट्रो रेल भवन में मेट्रो रेलवे स्पोर्ट्स एसोसिएशन द्वारा आयोजित एक समारोह में अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तरों पर विभिन्न खेल स्पर्द्धाओं में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए मेट्रो रेल के 56 खिलाड़ियों को सम्मानित किया।

इन खिलाड़ियों में श्री सुमित मुखर्जी, ब्रिज खिलाड़ी, ग्रैंड मास्टर श्री सायंतन दास, टेबल टेनिस खिलाड़ी सुश्री पोयमंती बैस्या, क्रिकेटर श्री आकाश पांडे, ब्रिज खिलाड़ी श्री देवव्रत मजूमदार एवं श्री सागनिक रॉय शामिल थे। महाप्रबंधक महोदय ने इन सभी खिलाड़ियों को सम्मानित करते हुए उन्हें मेट्रो का गौरव बताया।



नवउद्घाटित अंडर रिवर मेट्रो में 17 दिनों में 7.5 लाख यात्रियों ने यात्रा का आनंद उठाया

कोलकाता मेट्रो की ग्रीन लाइन पर अंडर रिवर मेट्रो में प्रारंभिक 17 दिनों में 7.5 लाख यात्रियों ने यात्रा का आनंद उठाया। हावड़ा मैदान से हुगली नदी के नीचे ग्रीन लाइन के एस्प्लानेड खंड पर वाणिज्यिक सेवा 15.03.2024 से शुरू हो गई है। वर्तमान में इस खंड पर हावड़ा मैदान, हावड़ा, नया महाकरन और एस्प्लानेड चार मेट्रो स्टेशन हैं। एस्प्लानेड मेट्रो स्टेशन ग्रीन लाइन और ब्लू लाइन के बीच एक इंटरचेंजिंग स्टेशन के रूप में कार्य करता है।

अनुवाद अधिकारियों के लिए उच्च स्तरीय अनुवाद कार्यशाला

दिनांक 28.02.2024 को मेट्रो रेलवे, पूर्व रेलवे एवं दक्षिण पूर्व रेलवे के अनुवाद अधिकारियों के लिए मेट्रो रेल भवन में एक पूर्णदिवसीय

अनुवाद कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कोलकाता स्थित

रेल कार्यालयों से 12 प्रतिभागी शामिल हुए। कार्यशाला में पूर्व रेलवे एवं दक्षिण पूर्व रेलवे के उप महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री प्रेमचंद डांग तथा सेवानिवृत्त उप महाप्रबंधक (राजभाषा), पूर्व रेलवे श्री चंद्र गोपाल शर्मा ने संबंधित विषय पर अपनी जानकारीयां साझा कीं।



कवि सुभाष में नया मेट्रो कारशेड का निर्माण

यात्रियों हेतु बेहतर सेवा सुनिश्चित करने और नोआपाड़ा कार डिपो पर रखरखाव के दबाव को कम करने के लिए मौजूदा कवि सुभाष कारशेड के पार्श्व में एक अलग रखरखाव शेड का निर्माण किया गया है। इस शेड में निरीक्षण खड्ड (इंस्पेक्शन बे), उत्तोलक खड्ड (लिफ्टिंग बे) और ठहराव लाइनें (स्टेबलिंग लाइन) बनाए गये हैं। यह कारशेड निर्माणाधीन ऑरेंज लाइन की रैक रखरखाव आवश्यकतों को पूरा करेगा।

रेकों की त्रिस्तरीय निरीक्षण के लिए इस कारशेड में दो समर्पित लाइनें होंगी। साथ ही इस नए शेड में 6 नए ठहराव लाइनें भी होंगी। कारशेड में रेकों की धुलाई के लिए एक स्वचालित ट्रेन वॉशिंग प्लांट भी है। यार्ड में मेट्रो रैक की शंटिंग के लिए एक बैटरी चालित रेल सह रोड शंटर भी उपलब्ध होगा।



कोलकाता मेट्रो में विशेष जागरूकता अभियान

यात्रियों को विभिन्न मेट्रो नियमों के बारे में जागरूक करने और मेट्रो परिसर में यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मेट्रो रेलवे नित नया अभियान चलाता है। हाल ही में ऐसे ही एक अभियान के रूप में MEME तैयार किया गया है जिसमें एक आकर्षक टैगलाइन, 'बुझे खेलुन, सुरखित थाकुन' (सतर्क रहें, सुरक्षित रहें) के साथ अनावश्यक रूप से पीली रेखा को पार न करने का अनुरोध किया गया है। क्रिकेट खिलाड़ियों के माध्यम से प्रस्तुत इस MEME ने कोलकाता मेट्रो परिसर में यात्रियों को 'क्या करें और क्या न करें' के बारे में जागरूक बनाया है।

गैर-किराया राजस्व बढ़ाने की एक और अनूठी पहल

पेपर आधारित क्यूआर कोड टिकट प्रणाली ईस्ट-वेस्ट मेट्रो कॉरिडोर के सभी परिचालित स्टेशनों पर लागू कर दी गई है। यह टिकटिंग प्रणाली यात्रियों के बीच खासी लोकप्रिय हो रही है। मेट्रो प्राधिकारी अब इस क्यूआर कोड आधारित टिकट के पिछले हिस्से को व्यावसायिक उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करने पर विचार कर रहे हैं। मेट्रो यात्रियों को अपने उत्पाद/सेवा की ओर आकर्षित करने के लिए बड़े कॉरपोरेट घराने टिकटों पर अपने विज्ञापन प्रदर्शित करने के इच्छुक हैं।



कुछ दाग अच्छे होते हैं

उस दिन सुबह मैं जल्दी उठ गयी थी। अखबार वाले से अखबार लगभग छीनते हुए उस पर नजरें गड़ा दीं, दरअसल उस दिन मेरा रिजल्ट आने वाला था। तो मैं खुशी से चीख उठी थी। माँ, देखो मेरा रिजल्ट आ गया है, मैं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई हूँ। माँ का चेहरा खुशी से खिल उठा था बहुत-बहुत बधाई हो बेटी। तुम अब प्रोफेशनली कालिफाइड हो चुकी हो। दामाद जी सुनेंगे तो खुश हो जाएंगे। जी माँ, मैं फोन करने दौड़ पड़ी थी। हैलो सुनो जी। मैं प्रथम श्रेणी डिस्टिंग्शन के साथ पास हुई हूँ।

ओह! अच्छा है, मैं कल आ रहा हूँ। यहाँ माँ से काम नहीं होता है, तुम्हें साथ लेता आऊंगा। मैं मायूस हो गई थी, इतनी फीकी प्रतिक्रिया! खैर, शायद फोन पर ज्यादा बोलना नहीं चाहते होंगे। अभी मेरी शादी को मात्र चार महीने ही हुए थे। शादी के बाद 'पहले सावन' में मैं माँ के पास आई हुई थी। उसी समय मुझे फाइनल रिजल्ट का भी पता चला था। मैं बहुत उत्साहित थी, मैं भी जॉब करूँगी। मेरा भी एक अलग परिचय होगा, घर- बाहर दोनों मैं संभाल लूँगी, वगैरह-वगैरह!

अगले दिन रोहित जी आये और उनके साथ मैं ससुराल लौट आयी थी। घर में केवल सास ही थीं। बीमारी की वजह से वह सारा दिन या तो बैठी रहती थी या सोई रहती थी। बहू के बाहर जाकर काम करने के नाम से वह खफा हो गई थी। मैंने नोटिस किया कि रोहित जी को भी मेरा जॉब करना कुछ खास पसंद नहीं था उनका कहना था, चूँकि उनकी ऊँची का शेड्यूल फिक्स्ड नहीं है, अतः मेरे कार्य पर जाने से नास्ता, टिफिन, सब समय पर मिल न पायेगा। सब सुनकर मैं चुप रह गई। घर में शांति थी।

इसी बीच 'सुहाना' का पदार्पण मेरे जीवन में हुआ। कुछ समय के लिए मैं उसी में रम गई थी, थोड़े दिनों के बाद सास भी चल बसी। घर बाहर के सभी काम, रोहित को समय पर दफ्तर भेजना, सुहाना की जिम्मेदारी सब मैं बखूबी निभा रही थी। परन्तु मैं जब भी अलमारी खोलती, मुझे मेरे सर्टिफिकेट्स नजर आते, ऐसा लगता मानो मेरी बड़ी-बड़ी डिग्रीयाँ मुझे चिढ़ा रही हों। आँखों के कोर भींग

जाते! मैं कुछ न कर पायी।

रोहित से कहने पर वही घिसा-पिटा सा जबाब देते, मेरी ऊँची का कोई निश्चित समय नहीं है, सुहाना का ख्याल कौन रखेगा? एक बार मैंने कहा था "क्यों ना मैं सुहाना के स्कूल में काम करना शुरू कर दूँ?" हम दोनों एक साथ आना-जाना करेंगे।

मगर तुम्हें तो शनिवार को भी जाना पड़ेगा, जबकि सुहाना की उस दिन छुट्टी रहेगी, उसका क्या? रोहित ने कुछ तैश में आकर कहा था। एक दिन आप ध्यान रख लेना, उस दिन तो आपका भी ऑफ रहता है, मैंने भी कुछ जोर से कहा था।

पागल हो, छुट्टी के दिन भी काम, मुझसे नहीं होगा।

सुहाना कुछ बड़ी होगी तो जॉब कर लेना। तुमने किसी अनपढ़ से शादी कर ली होती-मैंने जोर से चिल्लाकर कहा। घर की शांति भंग होने लगी थी। मगर रोहित जी से विरोध का साहस मुझ में कभी नहीं था।

माँ ने भी समझाया, बेकार ये जॉब-बॉब का चक्कर छोड़, अपना परिवार ठीक से देख, बेटी की परवरिश सही से कर और खबरदार दामादजी के विरुद्ध मत जा। मैंने माँ की बातें गाँठ बाँध ली। घर में शांति रहने लगी।

रोहित जी का केवल ऑफिस में ही मन लगता। सुहाना किस कक्षा में पढ़ती है, ये भी उन्हें पता न था। कभी टोकने पर कहते 'इतनी ऊँचाई पर पहुँचने के लिए



कितनी मेहनत की आवश्यकता होती है, इसे तुम घर में बैठे-बैठे नहीं समझोगी। मैं चकित होकर उन्हें देखते रह जाती। अलमारी खोलकर अपने प्लास्टिक कवर में बंद सर्टिफिकेट्स को सहलाती और मन ही मन सोचती, मैं तेरे कुछ काम न आ पायी।

समय बीतते देर नहीं लगती। सुहाना अच्छे नंबरों से पास कर गई और आगे की पढ़ाई के लिए बाहर चली गई। कुछ ही दिनों में नाते-रिश्तेदारों ने कहना शुरू कर दिया 'सारा दिन क्या करती हो? घर में मन कैसे लगता है? एक दिन भाई का फोन आया "तुमने तो जीवन भर कुछ नहीं किया, अपनी बड़ी-बड़ी डिग्रीयाँ बर्बाद कर दीं, मैंने तुम्हारी भाभी को एक स्कूल में ज्वाइन करवा दिया है।

एक दिन रोहित जी ने कहा, कुछ कोशिश क्यों नहीं करती? घर में बैठे-बैठे कुँए की मेंढक हो गई हो।

अब इतने वर्षों के बाद फिर से मैं जॉब के लिए कोशिश करूँ? क्या इस उम्र में मुझे जॉब मिलेगा? मन में अनेक प्रकार के प्रश्न थे। मैंने ऑनलाइन फार्म भरा और साहस कर अपने सर्टिफिकेट्स लेकर एक कंपनी में पहुँच गई। जाकर देखा इंटरव्यू के लिए लम्बी लाइन है, अधिकतर कम उम्र के फ्रेशर ही थे।

इंटरव्यू कक्ष में मुझसे पूछा गया- इससे पहले आपने कहाँ काम किया है? जी पारिवारिक परिस्थितियों के कारण मैंने पहले कहीं काम नहीं किया है। जबाब देते हुए मुझमें कुछ हीन भावना आ गई थी।

तो इतने वर्षों तक आप घर में थीं। एक फ्रेशर के रूप में आपकी उम्र अधिक है एवं आपके पास कुछ अनुभव नहीं है, अतः हम आपको हायर नहीं कर सकते।

मैं घर लौट आयी, अब परिस्थिति बदल चुकी थी। अनुभव के अभाव में मेरी डिग्रीयों का मोल घट गया था। कुछ और जगह कोशिश की, पर नाकामयाब रही।

अंत में एक जगह और सही, सोचते हुए मैं एक कंपनी जा पहुँची। यहाँ भी फ्रेशर की ही भीड़ अधिक थी।

यहाँ हमें कहा गया कि एक लिखित परीक्षा होगी, जिसके आधार पर नियुक्ति होगी। लिखित परीक्षा का

फॉर्म भरते हुए मैंने सोचा कि ये मेरा अन्तिम प्रयास होगा। लिखित परीक्षा के प्रश्नों का उत्तर मैंने अपने सामान्य ज्ञान के आधार पर दिया।

रिजल्ट चार घंटे बाद निकलनी थी। मैं रिजल्ट के इंतजार में बैठी रही। मुझे पास होने की कुछ खास उम्मीद नहीं थी। मगर जब रिजल्ट आया तो तीसरा नाम मेरा ही था। मैंने अपने आपको बधाई दी और रोहित जी को खुशी की खबर सुना दी। मगर पता नहीं क्यों मुझे उतनी खुशी नहीं थी शायद अब मुझमें पहले जैसा उत्साह नहीं था।

अपना बैग उठाते वक्त देखा कि बगल में एक अभ्यर्थी की आँखें नम थी। सांत्वना देने के उद्देश्य से मैंने कहा "कोई बात नहीं, अगली बार जीत पक्की है"। लड़को रोने लगी थी। "पता नहीं आंटी, अगली बार दे पाऊँगी या नहीं?" क्यों ऐसा क्यों? मैंने पूछा।

दरअसल अगले सप्ताह मेरी शादी होने वाली है। पता नहीं ससुराल वाले मुझे जॉब करने देंगे या नहीं, अगर ये जॉब मुझे मिल जाती तो वे मना नहीं कर पाते। मात्र एक नंबर से मैं पिछड़ गई। "कोई बात नहीं, सब अच्छा होगा", कहकर वहाँ से निकल आयी।

शाम को रोहित जी ने कहा, अब तो तुम्हारी जॉब पक्की हो गई। नहीं, सेकेंड राउंड इंटरव्यू में पास न कर पायी, मेरी जगह एक फ्रेशर को ले लिया गया।

हाँ पता था, कुछ ऐसा ही होगा, घर बैठे-बैठे तुम्हारी बुद्धि में भी जंग लग गई है।

मुझे उनकी बातों का बुरा नहीं लगा, क्योंकि **"कुछ दाग अच्छे होते हैं।"** मेरे न करने से उसी फ्रेशर लड़की की नियुक्ति हो गई थी। अलमारी में सर्टिफिकेट रखते हुए मैं मन ही मन मुस्कुरा रही थी। मैंने पहली बार अपने मन की सुनी थी। मुस्कुरा कर चलना हमने वक्त से सीखा है जिन्दगी जीने का बस यही तरीका है।

- रूपा भट्टाचार्य

पत्नी - शुभाशीष भट्टाचार्य
सेवानिवृत्त - उप मु. परि. प्र.

लोक गीतों में 'गारी' (गाली)

.. माँ, माँ क्या गाली गायी भी जाती है? एक दिन मेरे बेटे ने प्रश्न किया। बेटा कुछ पढ़ाई कर रहा था, उसी में लोक संस्कृति के विषय में पढ़ रहा था, तब मैंने बताया कि हाँ बेटा, लोकगीतों में गारी या गाली ढोलक मंजीरे के साथ सस्वर गायी जाती है, जो बच्चे के जन्म से शुरू होकर विवाह तक चलती है। इसके अलावा तीज त्योहारों पर या किसी भी शुभ अवसर पर गायी जाती है, जैसे होली में फाग के साथ, जोगीरा, विवाह सम्पन्न होने पर नकटा, झूमर आदि।

बेटे का यह प्रश्न करना स्वाभाविक था क्योंकि अब तो दो दिन में गोद भराई, तिलक, विवाह सब कुछ सम्पन्न हो जाता है। आज की पीढ़ी जानती ही नहीं है कि बन्ना-बन्नी, सोहर गाया जाना क्या बला है। अब तो ईवेंट मैनेजर आते हैं और कार्यक्रम सम्पन्न कराते हैं। हम लोगों के समय यानि 90 के दशक में कम से कम 10 दिनों तक सभी रिश्तेदार रहते थे और घर की महिलाएं रात में सब तरह के गाने गाती थीं तो हमलोग इस विधा से परिचित हैं।

हम लोगों के बच्चे तो अबे, साले....इत्यादि गाली से परिचित हैं। हमलोगों के समय में तो अबे तबे करके बात करना भी बदतमीजी समझी जाती थी, साले कहने के लिए तो सोचना पड़ता था लेकिन अब तो साले प्यार की भाषा है। जैसे-जैसे समाज में प्रगति हुई है गाली में भी प्रगति हुई है। हम उनका उल्लेख करने में असमर्थ हैं। 'डेढ़ इश्किया' सिनेमा की गाली तो सबको याद होगी, कितनी शालीन थी ".. सल्फेट" या अगर और शालीन है तो "क्यूटिया" कह दिया। गाली का चलन हर भाषा देश-काल और समाज में है। कोई भी इससे अछूता नहीं है। अब प्रश्न यह है कि गाली क्यों दी जाती है? चाहे वह झगड़े के दौरान दी जाए या सस्वर गायी जाए। इसके पीछे का मनोविज्ञान क्या है? तो जहां तक मुझको समझ में आता है गाली के माध्यम से मनुष्य अपनी कुंठा को दूर करता है। शारीरिक रूप से कमजोर है या परिस्थिति ऐसी हो कि मारपीट नहीं कर सकता है तो वो ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं कि विरोधी को खराब लगे। अगर हमारे सुधी पाठकों ने ध्यान दिया होगा, गाली का केंद्र अधिकतर महिलाएं होती हैं। उन्हीं से संबंधित गाली या कहें तो माँ, बेटा एवं बहन से संबंधित

गाली दी जाती है, क्यों? पुरुषों से संबंधित गाली नहीं होती है? महिलाएं घर समाज देश की इज्जत होती हैं। अर्थात सम्मान होती है शायद इसीलिए उनको केंद्र बिंदु बनाया जाता है या फिर निम्नतर को जैसे- 'बसंती इन कुत्तों के सामने मत नाचना' आदि।

यही मनोविज्ञान गारी या गाली गाने में भी लागू होती है। तो बच्चे के जन्म से शुरू करते हैं- बच्चे की बुआ के लिए गारी गायी जाती है.. भाभी के मनोभाव 'सौत मेरी आ गई, लेके बधावा या ननद रानी कपड़े मिठाई सब तो लाई लेकिन साथ में हलवाईयाँ और बजजवा साजन भी लाई।' इसी तरह भाभी रानी ने ननद को काजल लगाई काठ की कठौती (अब तो लुप्त हो गई है, पहले बहुत सस्ती होती थी) दी तो उसको भी अगले दिन मंगा लिया..... सब कुछ किया कुछ ना खला, खल गई रे, काठ की कठौती खल गई रे, होत सवेरे देवर तुम चले जाना जोग लाना काठे की कठौती.... यह सब 'गारी' के माध्यम से ही कहना संभव है। इसी प्रकार कन्या पक्ष वर पक्ष को और वर पक्ष कन्या पक्ष को मधुर मधुर गारी से नवाजते हैं।

विवाह में पहले तिलक होता है उसमें गारी कन्यापक्ष को वरपक्ष सुनाता है....तिलक होगा खराब, गाली दूंगी हजार, समधी साले को अँगने में बांध रखूंगी--- फिर बारात आई दरवाजे पर तो स्वागत गाली से हुआ.. बाबा बराती लाया, दादी नचाता लाया (अब ये प्रासांगिक नहीं रहा क्योंकि अब तो सभी महिलाएं बारात में नाचती जाती है।) पहले तो लड़की वाला बेचारा होता था, लेकिन इस बेचारगी को गाली के माध्यम से सशक्त बनाया जाता था.. रहते हैं, ये अड़ई मड़ई (झोपड़ी में) पक्का घर देखने आए हैं.. पूड़ी कचौड़ी के नाम न जाने, पूआ को कहें मेरी बुआ है.. ये समोसा को मौसा, कद्दू को ददू (महिलाओं की रचनात्मक प्रतिभा को सलाम) इसी तरह बहुत सी गेय गारी है। (सभी गालियां हमने अपने घर की शादियों में और माँ, मौसी, चाची, बुआ आदि से सुना है और इसे गाया भी है, गारी गाने को कोई बुरा नहीं माना जाता है। इस नोक-झोंक से माहौल खुशनुमा हो जाता है।) शादी विवाह में गाली या गारी (गाने के माध्यम से सुनना सम्मान

समझा जाता था। अपना अनुभव बता रही हूँ कि घर में मेरी सबसे बड़ी दीदी की शादी थी (हमलोग पाँचवी या छठी में पढ़ते थे) पहले बारात को भात या कच्चा खाना खिलाकर विदा किया जाता था तो दीदी के ससुर अपने सम्माननीय रिश्तेदारों के साथ मंडप में भात खाने बैठे लेकिन खाना नहीं शुरू किया। तो पता चला कि खाते समय, जेवनार या गारी नहीं गायी जा रही है इसलिए समधी साहब नाराज हैं। जब गाली गायी गई तब सबने खाना खाया। इसी प्रकार एक और वाक्या साझा करती हूँ - बड़े भैया की शादी थी बारात भाभी को लेकर वापस आ गई अगले दिन सब लोग पात में पत्तल पर खाना खाने बैठे तो सबसे बड़े जीजा जी ने कहा कि 'भाई एक बात हमको समझ नहीं आ रही है कि लड़की वालों को कैसे पता चला कि मुन्ना बाबू(साले)....हैं क्योंकि महिलाएं गाने के माध्यम से बता रही थीं। हँसते हँसते सब लोग दोहरे हो गए। शुभ अवसर पर गीतों के माध्यम से दी जाने वाली गाली मीठी लगती है और मन को गुदगुदाती है।

लोक गीतों में गारी एक विस्तृत विषय है इस पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है। अतिशयोक्ति नहीं होगी अगर कहें कि "सब धरती कागद करूँ, लेखनी सब बनराई, सात समुद्र की मसी करूँ, लोकगीतों में गारी गुण लिखी ना जाए।"

श्रीमती मालिनी अवस्थी जी, श्रीमती शारदा सिन्हा जी ने इस लुप्त और मृतप्राय विधा को पुनर्जीवित करने का सार्थक प्रयास किया है। इसके साथ ही हेमा पांडे, श्रीमती नेहा सिंह राठौर भी इस दिशा में सराहनीय प्रयास कर रही हैं। सुश्री हेमा पांडे जी अपनी बहनों के साथ स्टेज शो में गारी विधा को सजा संवार रही है। हम आशा कर सकते हैं यह विधा विलुप्त होने से बच जाएगी।

अपने पाठकों से एक विनम्र निवेदन के साथ अपनी लेखनी को विराम देना चाहूँगी कि आप अपने घरों में अपनी माँ, दीदी, चाची, बुआ जिसको भी गाली गाना आता हो, उनके माध्यम से नई पीढ़ी में हस्तांतरित करने का प्रयास करें।

— संगीता कुमार

पत्नी-श्री राजेश कुमार
प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी

इक ख्वाहिश...

छोटी सी जिंदगी की छोटी सी ख्वाहिश...
फिर जाने कब कैसे बन गई यह इक गुजारिश...
मैं तो चली हर मुश्किल में एक मजबूत चट्टान की तरह...
फिर जाने कब कैसे बन गई एक असहाय नारी....
जिस आंगन को स्वर से सजाया बढ़ाया वही क्यूं बन गया पराया...
जीवन साथी हूँ तो फिर हर एक फैसला क्यों तुम्हारा, नहीं हमारा...
बच्चों से सुना है आती है खुशियाँ फिर वो भी कर दिया पराया...
घर की जिम्मेदारी बड़ों की इज्जत क्यों मेरी ही खुशियाँ की हत्या करके निभाया
छोटी सी जिंदगी की छोटी सी ख्वाहिश जाने कब कैसे बन गई यह इक गुजारिश
चीखी चिल्लाई आत्मविश्वास पर चोट खाई पर कसूर आज तक अपना ना जान पाई
दुनिया देखे दोहरा चेहरा मन की गहराई कोई नहीं जान पाया
बस एक उम्मीद कि कोई है वहाँ ऊपर वाला सुना है उसका न्याय नहीं कभी खाली जाता...
छोटी सी जिंदगी की छोटी सी ख्वाहिश जाने कब कैसे बन गई यह इक गुजारिश...
थम जाऊँ, ठहर जाऊँ बह जाऊँ
जीवन की डगर में कहाँ रह जाऊँ
खुले गगन के तले एक बहती धारा, ढूँढ़े कोई किनारा..
जहाँ थम जाऊँ, ठहर जाऊँ रुक जाऊँ
मैं नदिया ढूँढ़ूँ कोई किनारा....
जहाँ मैं ना मैं रहूँ बस बन जाऊँ कल-कल करती धारा
छोटी सी जिंदगी की....
छोटी सी ख्वाहिश.....

— श्रीमती रत्ना गर्ग

पत्नी – श्री देवेन्द्र कुमार
मुख्य इंजीनियर/निर्माण

भरमाती, चकाचौंध करती दुनिया विज्ञापनों की

जीवन जीने का सहज सामान्य तरीका अब बीते दिनों की बात हो गई है। अब समय है तथाकथित 'स्मार्ट' तरीके का जहां कुछ भी सहज सामान्य नहीं है।

हां, इस स्मार्ट तरीके से जीवन जीने के अच्छे खासे पैसे भी खर्च होते हैं लेकिन जब एक सुंदर बाला, एक नामी अभिनेता, एक प्यारा सा गोलू-मोलू बच्चा आपको सलाह देता है या यूं कहें कि आप पर 'दबाव' बनाता है तो आप पैसे खर्च करने के लिए तैयार हो ही जाते हैं। बिना ये सोचे कि- 'क्या ऐसा करना जरूरी है?'

अब जरा देखिए कुछ उदाहरण – कमरा सुगंधित रखने के एक 'उत्पाद' के विज्ञापन में दिखाया जाता है कि किस तरह आंखें बंद करके कुछ लोगों को एक कमरे में बैठा दिया जाता है और टेबल पर कूड़ा रख दिया जाता है, उन लोगों से पूछा जाता है कि टेबल पर क्या रखा है? वे लोग खुश हो कर सुगंध का नाम बताते हैं और जब उनके आंखें खोली जाती है तो वे विस्मित होकर देखते हैं कि सामने तो कूड़ा रखा है।

आप ही सोचिए इसका क्या अर्थ है? घर में चाहे जितनी गंदगी हो, आप केवल कृत्रिम सुगंध का इस्तेमाल करिए और फुरसत हो जाइए।

साफ सफाई का अपना महत्व है और हम सबके स्वास्थ्य के लिए ये आवश्यक है, आप अपनी आँखों पर पट्टी नहीं बांध सकते।

सुगंध के लिए आप प्राकृतिक तरीकों का इस्तेमाल कर सकते हैं, जैसे ताजे फूल, नींबू-संतरे के छिलके.. आदि।

लेकिन ये विज्ञापन आपको इस तरह बर्गालाएंगे..

फिर बात आती है घर की साफ सफाई की। विज्ञापन आपको बताते हैं कि पानी में क्या डालकर फर्श की सफाई करें। यदि आप फलां-फलां उत्पाद पानी में नहीं मिलाते तो बैक्टीरिया नहीं मरेंगे और आपके बच्चों को नुकसान

पहुचाएंगे। कोई बताए कि बैक्टीरिया फ्री संसार में मनुष्य कैसे जीवित रहेगा भला। जो बैक्टीरिया को मारेंगे वो मनुष्य के लिए नुकसान रहित कैसे हो सकते हैं?

आजकल के बच्चों में रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती ही जा रही है, क्या कारण है? हमारा अतिरिक्त 'सुरक्षा कवच' और कुछ नहीं। एक विज्ञापन में दिखाया जाता है- 'घर तो सुंदर है पर बाथरूम में 'ये' नहीं रखा है तो इनका तो कोई लेवल ही नहीं है, जब एक सुंदर लड़की ये कह रही है तो भला ऐसा कैसे हो सकता है कि आप अपना लेवल दिखाने से पीछे रह जाए। तो आप वह चीज अवश्य खरीदकर लाएंगे ही भले ही उसकी जरूरत महसूस हो या नहीं।

कुछ मसालों के विज्ञापन दिखाते हैं कि किस तरह घर के बने मसालों से बेस्वाद खाना बना और किसी ने नहीं खाया फिर जब पैकेट वाला मसाला डाला तो सबने सफ़ाचट कर डाला। इसके बाद कुछ मसालों के विज्ञापन ही इस तरह के आए कि इसमें दादी नानी के हाथों का स्वाद है, अब ये तो विरोधाभास हुआ ना।

इसका साफ अर्थ ये है कि इनका उद्देश्य किसी भी तरह भरमाके अपना सामान बेचना है। जिसमें इन्हें महारत हासिल है।

कुछ विज्ञापनों में छोटे बच्चों को जरूरत से ज्यादा समझदार और विद्वान बनाने की कोशिश की जाती है। बच्चे बताते हैं कि टी.वी पे किसका कनेक्शन लिया जाए, कौन सा पैकेज लिया जाए.. इत्यादि। बच्चे बताते हैं कि कार कहाँ बेची जाए, कौन सा बिस्कुट खरीदा जाए और आखिर में 'पापा को इतना भी नहीं पता' बच्चे की चमकती आँखें दिखाई जाती हैं कि इन सारी चीजों का ज्ञान केवल उसे ही है। अब टीवी से नकलकर ये ज्ञान घरों में भी दिया जाने लगा है और बच्चे चाहते हैं कि घर में वही सामान आए जो वे कहें। आप समझे। विज्ञापन का इरादा जो भी था वो पूरा हुआ, वे कामयाब हो गए। बच्चे बाजार नहीं समझते, जरूरत

नहीं समझते, बस उन्हें कुछ चाहिए तो चाहिए। आपको मन मारकर खरीदना पड़ेगा।

अब बात आती है सौन्दर्य प्रसाधनों की, बाजारीकरण देखिए- कैसे अचानक से भारत से विश्वसुंदरी चुनी जाने लगीं और उनके साथ-साथ भारत में आए मल्टीनेशनल कंपनियों के ढेरों उत्पाद। झुर्रियां ना आने देने वाले क्रीम (दावे तो यही किए गए) बालों को रेशमी, मुलायम बनाने वाले शैम्पू और कंडीशनर, हेयर कलर्स.. आदि लोग खूब खरीद रहे हैं, इस्तेमाल कर रहे हैं और बाल झड़ने की समस्या लेकर डॉक्टर के पास भी जा रहे हैं।

याद करिए अपनी माओं, नानियों-दादियों के बाल। क्या वे ज्यादा खूबसूरत नहीं थे। क्या उनकी त्वचा ज्यादा अच्छी नहीं थी और एक नई लहर चली है 'हर्बल' की। सब कुछ हर्बल के नाम से बिक रहा है। शहद, दूध, केसर, हल्दी चंदन से बने तथाकथित उत्पाद हास्यास्पद हैं। समझ नहीं आता कि कौन सी वस्तु खाने की है और कौन सी लगाने की। आप सोचिए, क्या आपको लगता है कि इनमें ये सब होगा? अगर हाँ तो ये वस्तुएं तो घर-घर में उपलब्ध हैं ही, आपको बाजार में बनी हुई मिलावटी वस्तुओं की क्या आवश्यकता है?

अगर कोई उत्पाद किसी को गोरा और खूबसूरत बना सकता है तो दुनिया में सामान्य और सांवले दिखने वाले लोग बचे ही कैसे हैं? जबकि सालों से फेयरनेस क्रीम वगैरह लगा रहे हैं।

अब भी समय है, अपनी बुद्धि लगाइए और सोचिए कि आपको वास्तव में क्या खरीदना है, क्या नहीं? बच्चों को विज्ञापन दिखाकर खाना खिलाने की आदत न डालें, ये उनके बालपन पर गलत प्रभाव डालता है।

सोच विचारकर खर्च करने से हमारा बजट भी नहीं बिगड़ेगा और हम ज्यादा स्वास्थ्य जीवन जिएं। भेड़ चाल में पड़कर अपना पैसा और समय ना खर्च करें।

- अलका सिंह

पत्नी- आर. एन. एस. परिहार
महाप्रबंधक के सचिव

चुनाव

लो आ गया फिर से चुनाव का मौसम,
फहरेगा फिर से अपने मताधिकार का परचम।

रंग बिरंगे टोपी में नेता निकले टोली में।
कुछ नये कुछ पुराने वादे रखे अपनी झोली में,
जुमले की कड़ी लगाये हर एक रैली में।

लो आ गया फिर से चुनाव का मौसम,
फहरेगा फिर से अपने मताधिकार का परचम।

कोई नेता इधर पलटे,
कोई गये उधर।
सच्चे - झूठे सपने दिखाये,
दिखाये विकास की लहर।

लो आ गया फिर से चुनाव का मौसम,
फहरेगा फिर से अपने मताधिकार का परचम।

हर दिल में एक सपना, हर मन में एक ही आस।
बेहतर हो ये जिंदगी,
चाहे आम हो या खास।

लो आ गया फिर से चुनाव का मौसम,
फहरेगा फिर से अपने मताधिकार का परचम।

महिला, युवा और बुजुर्ग और सारे समझदार,
सोच समझ कर ध्यान लगाकर करना है प्रयोग अपने
मत का अधिकार।

देखो भईया भूल न जाना, मतदान का कर्तव्य
निभाना,
देश की समृद्धि और विकास में अपनी भागीदारी
पक्का करना।

लो आ गया फिर से चुनाव का मौसम,
फहरेगा फिर से अपने मताधिकार का परचम।

- ऋचा पराशर अम्बष्टा

पत्नी- पी.पी. अम्बष्टा
सहायक कार्यपालक इंजीनियर/नि-।

खबरों की अनोखी दुनिया

एक अच्छे दिन की शुरुआत का तय मानदंड है, सुबह एक प्याली गर्म चाय के साथ अखबार और ताजा तरीन



समाचारों की दुनिया। समाचारों या खबरों का एक बड़ा ही रोचक संसार होता है। कभी सोचा है आपने? देश, विदेश, प्रांत और अन्य तमाम विषयों/विधाओं की जानकारी सुबह-सुबह आपके टेबल पर जो आ उपस्थित होती है, उसके पीछे की मेहनत, कार्य योजना और उसे अंतिम रूप से पेश किए जाने की यात्रा में कितने पड़ाव पार किए जाते हैं?

आइए जानते हैं खबरों या समाचारों के संदर्भ में कुछ दिलचस्प बातें-

ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1684 में, भारतवर्ष में प्रथम प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की लेकिन भारत का पहला समाचार पत्र 1780 में जेम्स आगस्टस हिकी द्वारा निकाला गया, नाम था 'बंगाल गज़ट'।

हिंदी समाचार पत्र की बात करें तो 30 मई 1826 में प्रकाशित 'उदंत मार्तण्ड' को हिंदी का प्रथम अखबार होने का गौरव प्राप्त है।

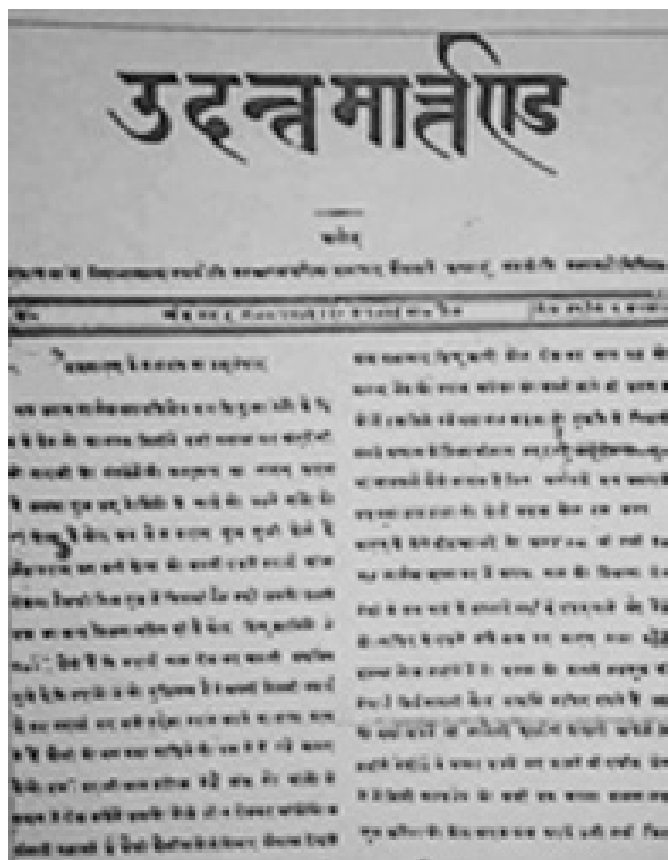
इसके बाद स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महाराष्ट्र, बंगाल और पंजाब के क्रांतिकारियों ने जन चेतना जगाने एवं जनमानस में अंग्रेजी शासन के विरोध में उठ खड़े होने

के लिए विद्रोह का जो बिगुल बजाया उसमें समाचार पत्रों, पैम्फलेट्स और क्रांतिकारी साहित्य, पत्र-पत्रिकाओं की एक अहम भूमिका रही।

तब से अब तक समाचार पत्रों ने अपनी यात्रा का एक लंबा सफर तय किया है।

आज का युग इंटरनेट और सोशल मीडिया का युग है। देश-विदेश की खबरें, घटनाएं, युद्ध की विभीषिका, रोज की भागती दौड़ती जिंदगी की जद्दोजहद और आरामदायक जीवन जीने के टिप्स, ट्रिक्स, ऑडियो-वीडियो स्वरूप में आपके फोन एवं कंप्यूटर पर सहज उपलब्ध हैं।

फिर भी जो सुकून और आनंद सुबह की अखबार और एक प्याली चाय से मिलता है, वह सोशल मीडिया की खबरों में कहाँ है। सोशल मीडिया पर मानों सूचनाओं और



खबरों की बाढ़ आ गई है, साथ ही कोई खबर कितनी सत्य और प्रामाणिक है, यह एक अलग मुद्दा है। 'फेक न्यूज' ज्यादा उपलब्ध है।

ऐसे में अखबारों के खबरों की प्रामाणिकता और सटीकता आज भी बनी हुई है।

खबरों का संकलन एवं उनका चुनाव अखबार छापने की कड़ी का प्रथम पड़ाव है। प्रत्येक विषय विशेष में समाचार संकलन को बीट के नाम से जाना जाता है (स्वास्थ्य बीट, मनोरंजन बीट, राजनीति बीट आदि) पत्रकार से विभिन्न बीट के लिए समाचार एकत्रित करने के क्रम में समाचार की समग्रता, मुद्दे की पूरी तस्वीर, तथ्यों का संतुलित आकलन, मामले के पीछे का कारण मीमांसा और तहकीकात करते हुए पूरी निष्पक्षता से रिपोर्टिंग के कर्म का निबाह करना जरूरी है। साथ ही यह भी ध्यान में रखा जाता है कि अखबार के समाचार की भाषा, शिल्प, शैली इस प्रकार की हो कि उसे संभ्रांत व्यक्ति से लेकर, रिक्शेवाला, पानवाला भी खबर को पढ़, समझ कर उसका आनंद ले सके।

साथ ही अखबारों के खबरों में सत्य की व्यापकता

बाधित ना हो, विरोधाभासी शैली ना हो और खबर प्रामाणिक रूप में जन पक्ष तक परोसी जा सके यह भी सुनिश्चित किया जाता है।

कौन सी खबर अखबार में छापी जानी है, इसके चुनाव के मानदंड होते हैं :-

देश से जुड़ी हुई, चल रही खबरें

- राज्य अथवा समाज में चल रहा, बदल रहा राजनैतिक परिवेश
- विदेशों, पड़ोसी मुल्कों में हो रहे बदलाव, युद्ध, अशान्ति, समसामयिक मुद्दे
- संपादक की कलम से जिसे हम संपादकीय के नाम से जानते हैं।
- खेल से जुड़ी खबरें, स्वास्थ्य, स्थायी स्तंभ, बच्चों का कोना, वर्ग पहेली
- नामचीन लेखकों/पत्रकारों द्वारा इतिहास, समाज, शिक्षा अथवा किसी अन्य विषय पर लिखा गया गंभीर सारगर्भित लेख।
- विज्ञापन



गत कुछ दशकों से खबरों को जुटाने की कुछ विश्वसनीय समितियाँ/श्रोत समाचारों/खबरों के आढ़तियों के रूप में उभरे हैं। इन्हीं समितियों के अस्तित्व में आने के बाद से एक ही प्रकार की खबरें विभिन्न समाचार पत्रों में छापी जाने लगी लगी हैं।

यानि अखबार जो भी हो, खबरे थोड़ी फेरबदल के साथ एक सी ही होंगी।

कुछ विशेष समाचार

समितियाँ, जिनकी खबरों के बाजार पर विशेष पकड़ या साख हैं, वे हैं:-

समाचार समितियाँ :-

समाचारों के आढ़तियों के रूप में विस्तृत क्षेत्रों के संवादों के संकलन, संपादन और प्रसारण की अपेक्षाकृत सस्ती एवं द्रुत व्यवस्था करने वाली कुछ समाचार समितियाँ हैं। इनका लक्ष्य होता है सत्य एवं निष्पक्ष खबरें सुलभ कराना।

संसार के समाचार समितियों की शुरुआत हुई।

भारत में कार्यरत प्रमुख समितियाँ हैं :-

- ✦ प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (पीटीआई)
- ✦ यूनाइटेड न्यूज ऑफ इंडिया (यूएनआई)
- ✦ हिंदुस्तान समाचार
- ✦ समाचार भारती
- ✦ यूनीवार्ता



इसके अलावा इनफा (Infra), इंडिया प्रेस एजेंसी, इस्टर्न न्यूज एजेंसी, यूनीवर्सल प्रेस सर्विस, न्यूज फीचर्स ऑफ इंडिया, पब्लिकेशन सिंडीकेट आदि भारतीय एजेंसिया हैं, जो समाचार, लेख, फीचर एवं सामयिक सामग्री विभिन्न समाचार पत्रों को मूल्य के बदले उपलब्ध कराती हैं।

खबरों की दौड़ इतनी लंबी होती है कि यह कई यात्रा बिंदुओं को पार कर, समाचार लेखन की कई कसौटियों पर जंच कर, छन कर

विशुद्ध रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत होती हैं।

तो आइए - एक गर्मागर्म चाय की प्याली के साथ, आज की सुबह को खास बनाते हैं, पढ़ते हैं आज की ताजा खबर...

- किरण बोस

संप्रति 05 महत्वपूर्ण समाचार समितियाँ जो विश्व में मान्य हैं, वे हैं :-

रॉयटर (ब्रिटेन), एम.पी. (अमेरिका), यू.पी.आई. (अमेरिका), एएफबी (फ्रांस) और तास (सोवियत संघ)। सन 1835 में फ्रांस में 'हावास' नाम की संस्था के साथ

राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिए
सारे देश में हिंदी और नागरी का प्रचार आवश्यक है।

- लाला लाजपत राय

भोलाराम का जीव सरकारी दफ्तरों में व्याप्त भ्रष्टाचार, घूसखोरी और लालफीताशाही जैसे अनैतिक कार्यव्यवहारों की एक ऐसी व्यंग्यात्मक कहानी है जिसके शिकार न केवल आम जनता होती है अपितु सरकारी महकमे में वर्षों अपनी सेवाएं प्रदान करनेवाले कर्मचारी भी इसे अछूते नहीं होते हैं। यह कहानी हमें एक ऐसे सरकारी कार्य प्रणाली से रूबरू कराती है जो निश्चय ही हमारे नैतिक पतन की ओर इशारा करती है और यह आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी कि यह अपनी रचनाकाल के समय थी।

ऐसा कभी नहीं हुआ था...

धर्मराज लाखों वर्षों से असंख्य आदमियों को कर्म और सिफ़ारिश के आधार पर स्वर्ग या नर्क में निवास-स्थान 'अलॉट' करते आ रहे थे। पर ऐसा कभी नहीं हुआ था।

सामने बैठे चित्रगुप्त बार-बार चश्मा पोंछ, बार-बार थूक से पन्ने पलट, रजिस्टर पर रजिस्टर देख रहे थे। गलती पकड़ में ही नहीं आ रही थी। आखिर उन्होंने खीझ कर रजिस्टर इतने ज़ोर से बंद किया कि मक्खी चपेट में आ गई। उसे निकालते हुए वे बोले, महाराज, रिकार्ड सब ठीक है। भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागी और यमदूत के साथ इस लोक के लिए रवाना भी हुआ, पर यहाँ अभी तक नहीं पहुँचा।

धर्मराज ने पूछा, और वह दूत कहाँ है? महाराज, वह भी लापता है।

इसी समय द्वार खुले और एक यमदूत बदहवास वहाँ आया। उसका मौलिक कुरूप चेहरा परिश्रम, परेशानी और भय के कारण और भी विकृत हो गया था। उसे देखते ही चित्रगुप्त चिल्ला उठे, अरे, तू कहाँ रहा इतने दिन? भोलाराम का जीव कहाँ है?

यमदूत हाथ जोड़ कर बोला, दयानिधान, मैं कैसे बतलाऊँ कि क्या हो गया। आज तक मैंने धोखा नहीं खाया था, पर भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया। पाँच दिन पहले जब जीव ने भोलाराम का देह त्यागा, तब मैंने उसे पकड़ा और इस

लोक की यात्रा आरंभ की। नगर के बाहर ज्यों ही मैं उसे लेकर एक तीव्र वायु-तरंग पर सवार हुआ त्यों ही वह मेरी चंगुल से छूट कर न जाने कहाँ गायब हो गया। इन पाँच दिनों में मैंने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर उसका कहीं पता नहीं चला।" धर्मराज क्रोध से बोला, मूर्ख! जीवों को लाते-लाते बूढ़ा हो गया फिर भी एक मामूली बूढ़े आदमी के जीव ने तुझे चकमा दे दिया।"

दूत ने सिर झुका कर कहा, महाराज, मेरी सावधानी में बिलकुल कसर नहीं थी। मेरे इन अभ्यस्त हाथों से अच्छे-अच्छे वकील भी नहीं छूट सके। पर इस बार तो कोई इंद्रजाल ही हो गया।"



चित्रगुप्त ने कहा, महाराज, आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चला है। लोग दोस्तों को कुछ चीज़ भेजते हैं और उसे रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। होजरी के पार्सलों के मोझे रेलवे अफ़सर पहनते हैं। मालगाड़ी के डब्बे के डब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है। राजनैतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर बंद कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने मरने के बाद ख़राबी करने के लिए तो नहीं उड़ा दिया?

धर्मराज ने व्यंग्य से चित्रगुप्त की ओर देखते हुए कहा, तुम्हारी भी रिटायर होने की उम्र आ गई। भला भोलाराम जैसे नगण्य, दीन आदमी से किसी को क्या लेना-देना?

इसी समय कहीं से घूमते-घामते नारद मुनि यहाँ आ गए। धर्मराज को गुमसुम बैठे देख बोले, क्यों धर्मराज, कैसे चिंतित बैठे हैं? क्या नर्क में निवास-स्थान की समस्या अभी हल नहीं हुई?

धर्मराज ने कहा, वह समस्या तो कब की हल हो गई, मुनिवर! नर्क में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनाईं। बड़े बड़े इंजीनियर भी आ गए हैं जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा खाया। ओवरसीयर हैं, जिन्होंने उन मज़दूरों की हाज़िरी भर कर पैसा हड़पा जो कभी काम पर गए ही नहीं। इन्होंने बहुत जल्दी नर्क में कई इमारतें तान दी हैं। वह समस्या तो हल हो गई, पर एक बड़ी विकट उलझन आ गई है। भोलाराम नाम के एक आदमी की पाँच दिन पहले मृत्यु हुई। उसके जीव को यह दूत यहाँ ला रहा था, कि जीव इसे रास्ते में चकमा देकर भाग गया। इस ने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर वह कहीं नहीं मिला। अगर ऐसा होने लगा, तो पाप पुण्य का भेद ही मिट जाएगा।”

नारद ने पूछा, उस पर इनकमटैक्स तो बकाया नहीं था? हो सकता है, उन लोगों ने रोक लिया हो।”

चित्रगुप्त ने कहा, इनकम होती तो टैक्स होता... भुखमरा था।” नारद बोले, मामला बड़ा दिलचस्प है। अच्छा मुझे उसका नाम पता तो बताओ। मैं पृथ्वी पर जाता हूँ।”

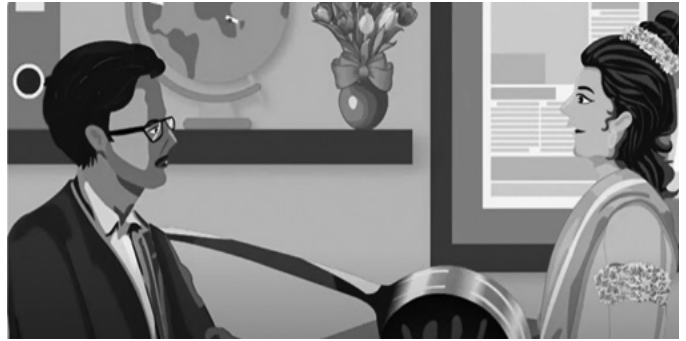
चित्रगुप्त ने रजिस्टर देख कर बताया, भोलाराम नाम था उसका। जबलपुर शहर में धमापुर मुहल्ले में नाले के किनारे एक डेढ़ कमरे टूटे-फूटे मकान में वह परिवार समेत रहता था। उसकी एक स्त्री थी, दो लड़के और एक लड़की। उम्र लगभग साठ साल। सरकारी नौकर था। पाँच साल पहले रिटायर हो गया था। मकान का किराया उसने एक साल से नहीं दिया, इस लिए मकान मालिक उसे निकालना चाहता था। इतने में भोलाराम ने संसार ही छोड़ दिया। आज पाँचवाँ दिन है। बहुत संभव है कि अगर मकान-मालिक वास्तविक मकान-मालिक है तो उसने भोलाराम के मरते ही उसके परिवार को निकाल दिया होगा। इस लिए आप को परिवार की तलाश में काफ़ी घूमना पड़ेगा।”

माँ-बेटी के सम्मिलित क्रन्दन से ही नारद भोलाराम का मकान पहचान गए। द्वार पर जाकर उन्होंने आवाज़

लगाई, नारायण! नारायण! लड़की ने देखकर कहा- आगे जाओ महाराज।” नारद ने कहा, मुझे भिक्षा नहीं चाहिए, मुझे भोलाराम के बारे में कुछ पूछ-ताछ करनी है। अपनी माँ को ज़रा बाहर भेजो, बेटी! भोलाराम की पत्नी बाहर आई। नारद ने कहा, माता, भोलाराम को क्या बीमारी थी?

क्या बताऊँ? गरीबी की बीमारी थी। पाँच साल हो गए, पेंशन पर बैठे। पर पेंशन अभी तक नहीं मिली। हर दस-पन्द्रह दिन में एक दरख्वास्त देते थे, पर वहाँ से या तो जवाब आता ही नहीं था और आता तो यही कि तुम्हारी पेंशन के मामले में विचार हो रहा है। इन पाँच सालों में सब गहने बेच कर हम लोग खा गए। फिर बरतन बिके। अब कुछ नहीं बचा था। चिंता में घुलते-घुलते और भूखे मरते-मरते उन्होंने दम तोड़ दी।”

नारद ने कहा, क्या करोगी माँ? उनकी इतनी ही उम्र थी।” ऐसा तो मत कहो, महाराज! उम्र तो बहुत थी। पचास साठ रुपया महीना पेंशन मिलती तो कुछ और काम कहीं कर के



गुज़ारा हो जाता। पर क्या करें? पाँच साल नौकरी से बैठे हो गए और अभी तक एक कौड़ी नहीं मिली।”

दुःख की कथा सुनने की फुरसत नारद को थी नहीं। वे अपने मुद्दे पर आए, माँ, यह तो बताओ कि यहाँ किसी से उनका विशेष प्रेम था, जिसमें उनका जी लगा हो?

पत्नी बोली, लगाव तो महाराज, बाल बच्चों से ही होता है।” नहीं, परिवार के बाहर भी हो सकता है। मेरा मतलब है, किसी स्त्री...” स्त्री ने गुर्रा कर नारद की ओर देखा। बोली, अब कुछ मत बको महाराज! तुम साधु हो, उचक्के नहीं हो। ज़िंदगी भर उन्होंने किसी दूसरी स्त्री की ओर आँख उठाकर नहीं देखा।”

नारद हँस कर बोले, हाँ, तुम्हारा यह सोचना ठीक ही है। यही हर अच्छी गृहस्थी का आधार है। अच्छा, माता मैं चला।”

स्त्री ने कहा, महाराज, आप तो साधु हैं, सिद्ध पुरूष हैं।

कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि उनकी रुकी हुई पेंशन मिल जाए। इन बच्चों का पेट कुछ दिन भर जाए।”

नारद को दया आ गई थी। वे कहने लगे, साधुओं की बात कौन मानता है? मेरा यहाँ कोई मठ तो है नहीं। फिर भी मैं सरकारी दफ़्तर जाऊँगा और कोशिश करूँगा।”

वहाँ से चल कर नारद सरकारी दफ़्तर पहुँचे। वहाँ पहले ही से कमरे में बैठे बाबू से उन्होंने भोलाराम के केस के बारे में बातें कीं। उस बाबू ने उन्हें ध्यानपूर्वक देखा और बोला, भोलाराम ने दरखास्तें तो भेजी थीं, पर उन पर वज़न नहीं रखा था, इसलिए कहीं उड़ गई होंगी।”

नारद ने कहा, भई, ये बहुत से 'पेपर-वेट' तो रखे हैं। इन्हें क्यों नहीं रख दिया? बाबू हँसा, आप साधु हैं, आपको दुनियादारी समझ में नहीं आती। दरखास्तें 'पेपरवेट' से नहीं दबतीं। खैर, आप उस कमरे में बैठे बाबू से मिलिए।”

नारद उस बाबू के पास गए। उसने तीसरे के पास भेजा, तीसरे ने चौथे के पास चौथे ने पाँचवें के पास। जब नारद पच्चीस-तीस बाबुओं और अफ़सरों के पास घूम आए तब एक चपरासी ने कहा, महाराज, आप क्यों इस इंज़ट में पड़ गए। अगर आप साल भर भी यहाँ चक्कर लगाते रहे, तो भी काम नहीं होगा। आप तो सीधे बड़े साहब से मिलिए। उन्हें खुश कर दिया तो अभी काम हो जाएगा।”

नारद बड़े साहब के कमरे में पहुँचे। बाहर चपरासी ऊँघ रहा था। इसलिए उन्हें किसी ने छेड़ा नहीं। बिना 'विजिटिंग कार्ड' के आया देख साहब बड़े नाराज़ हुए। बोले, इसे कोई मंदिर वन्दिर समझ लिया है क्या? धड़धड़ाते चले आए! चिट क्यों नहीं भेजी?

नारद ने कहा, कैसे भेजता? चपरासी सो रहा है।”

क्या काम है? साहब ने रौब से पूछा।

नारद ने भोलाराम का पेंशन केस बतलाया।

साहब बोले, आप हैं बैरागी। दफ़्तरों के रीति-रिवाज नहीं जानते। असल में भोलाराम ने ग़लती की। भई, यह भी एक मंदिर है। यहाँ भी दान पुण्य करना पड़ता है। आप भोलाराम के आत्मीय मालूम होते हैं। भोलाराम की दरखास्तें उड़ रही हैं। उन पर वज़न रखिए।”

नारद ने सोचा कि फिर यहाँ वज़न की समस्या खड़ी हो

गई। साहब बोले, भई, सरकारी पैसे का मामला है। पेंशन का केस बीसों दफ़्तर में जाता है। देर लग ही जाती है। बीसों बार एक ही बात को बीस जगह लिखना पड़ता है, तब पक्की होती है। जितनी पेंशन मिलती है उतने की स्टेशनरी लग जाती है। हाँ, जल्दी भी हो सकती है मगर...” साहब रुके।

नारद ने कहा, मगर क्या?

साहब ने कुटिल मुसकान के साथ कहा, मगर वज़न चाहिए। आप समझे नहीं। जैसे आपकी यह सुंदर वीणा है, इसका भी वज़न भोलाराम की दरखास्त पर रखा जा सकता है। मेरी लड़की गाना बजाना सीखती है। यह मैं उसे दे दूँगा। साधु-सन्तों की वीणा से तो और अच्छे स्वर निकलते हैं।”

नारद अपनी वीणा छिनते देख जरा घबराए। पर फिर संभल कर उन्होंने वीणा टेबिल पर रख कर कहा, यह लीजिए। अब जरा जल्दी उसकी पेंशन ऑर्डर निकाल दीजिए।”

साहब ने प्रसन्ता से उन्हें कुर्सी दी, वीणा को एक कोने में रखा और घण्टी बजाई। चपरासी हाजिर हुआ।

साहब ने हुक्म दिया, बड़े बाबू से भोलाराम के केस की फ़ाइल लाओ। थोड़ी देर बाद चपरासी भोलाराम की सौ-डेढ़-सौ दरखास्तों से भरी फ़ाइल ले कर आया। उसमें पेंशन के कागज़ात भी थे। साहब ने फ़ाइल पर नाम देखा और निश्चित करने के लिए पूछा, क्या नाम बताया साधु जी आपने?

नारद समझे कि साहब कुछ ऊँचा सुनता है। इसलिए जोर से बोले, भोलाराम! सहसा फ़ाइल में से आवाज आई, कौन पुकार रहा है मुझे। पोस्टमैन है? क्या पेंशन का ऑर्डर आ गया? नारद चौंके। पर दूसरे ही क्षण बात समझ गए। बोले, भोलाराम! तुम क्या भोलाराम के जीव हो?

हाँ! आवाज आई।”

नारद ने कहा, मैं नारद हूँ। तुम्हें लेने आया हूँ। चलो स्वर्ग में तुम्हारा इंतज़ार हो रहा है।”

आवाज आई, मुझे नहीं जाना। मैं तो पेंशन की दरखास्तों पर अटका हूँ। यहीं मेरा मन लगा है। मैं अपनी दरखास्तें छोड़कर नहीं जा सकता।”

— हरिशंकर परसाई

भारत में महिला समानता

भारतीय संविधान अपने हर नागरिक को समानता का अधिकार प्रदान करता है। यह लैंगिक आधार पर किसी भी नागरिक के साथ किसी भी प्रकार की भेदभाव की अनुमति नहीं देता। भारत के महान संविधान निर्माता भारतरत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर ने कहा था कि यदि किसी समाज की प्रगति के बारे में सही-सही जानना है तो उस समाज की स्त्रियों की स्थिति के बारे में जानो। कोई समाज कितना मजबूत हो सकता है, इसका अंदाजा इस बात से इसलिए लगाया जा सकता है क्योंकि स्त्रियाँ किसी भी समाज की आधी आबादी हैं। बिना इन्हें साथ लिए कोई भी समाज अपनी संपूर्णता में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर सकता है।

देखा जाए तो सृष्टि या सभ्यता के आरंभ से ही कुछेक अपवादों को छोड़कर मानव समाज मुख्य रूप से पितृसत्तात्मक समाज ही रहा है। चाहे इसके पीछे का कारण शारीरिक शक्तिबल हो या महिलाओं के प्रति दोगुना दर्जे की मानसिकता। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति के हर हिस्से में स्त्री की मौजूदगी के बावजूद वह स्वयं कभी इसका केंद्रबिंदु नहीं बन सकी। भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो स्त्रियों की स्थिति कभी भी संतोषप्रद नहीं रही। भारतीय समाज में स्त्रियों पर नाना प्रकार के सामाजिक और धार्मिक बंधन और वर्जनाएं आरोपित थे। वैदिक काल से ही विभिन्न समाजों ने अपनी आवश्यकता के अनुसार स्त्री को ढाला। उसके जीवन के हर पहलू पर पुरुष प्रधान मानसिकता का प्रभाव रहा है। उसके सोचने-समझने से लेकर उसके जीवन जीने के ढंग तक सभी चीजें पुरुष द्वारा परिभाषित और नियंत्रित किए जाते रहे हैं। आज भी परिस्थितियां बहुत अधिक आशानुकूल नहीं हैं। भारतीय संविधान में निहित तमाम स्त्री उत्पीड़क उपचारों के बावजूद समाज की सोच और मानसिकता में अपेक्षित स्तर का बदलाव नहीं आ सका है। स्त्री आज भी अबला है, डरी हुई, सहमी हुई, शोषित और पीड़ित। कई बार पर्याप्त शिक्षा, ज्ञान एवं सूचना के अभाव में और

कई बार सामाजिक, घरेलू दबाव में वे अपने अधिकारों से वंचित रह जाती हैं। कभी वह मुखरित होकर प्रतिरोध नहीं कर पातीं।

जब हम महिला समानता की बात करते हैं तो कदापि हमारा यह आशय नहीं है कि अब पितृसत्तात्मक समाज को बदल कर मातृसत्तात्मक समाज बना दें। हमारे देश में कई ऐसी जनजातीय समाज हैं जहां मातृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था मौजूद है, जहां महिलाएं ही सामाजिक जीवन से जुड़ी सभी महत्वपूर्ण फैसले लेती हैं। इससे परिस्थितियां कुछ खास बदलने वाली नहीं हैं। समानता का संबंध समाज की स्वस्थ मानसिकता से है। समाज में किसी एक लिंग की श्रेष्ठता स्थापित करने के बजाय इसे एक निरपेक्ष समाज के रूप में स्थापित करना ज्यादा वांछनीय है। इससे एक बेहतर सामाजिक संरचना तैयार हो सकेगी और सही मायनों में पुरुष-स्त्री समान रूप से सशक्त होंगे।



विश्व में महिलाओं की समानता के लिए जितने भी नारी आंदोलन हुए उसके मूल में भी यही आवश्यकता निहित है कि उनकी लड़ाई मनुष्य के रूप में पुरुष से नहीं अपितु समाज की पितृसत्तात्मक सोच एवं विचारधारा से है। नारीवाद उस विचारधारा के विरुद्ध लड़ाई है जिसमें नारी को पुरुषों की तुलना में कमतर आंका गया। उनके जीवन जीने के नियम और स्वरूप उनपर थोपे गए और उनके स्वतंत्र व्यक्तित्व को नकारा गया। नारी आंदोलन इस बात का पक्षधार है कि स्त्री को भी पुरुष के बराबर सम्मान,

अधिकार और अवसर प्राप्त हो।

हमारे देश के संदर्भ में कहा जाए तो शिक्षा के प्रसार के साथ ही स्त्री समानता की आवधारणा धीरे-धीरे बलवती होती गई। पुनर्जागरण काल में हुए धर्मसुधार एवं सामाजिक आंदोलनों ने भारतीय समाज में व्याप्त कई ऐसे कुरीतियों, धार्मिक कर्मकांडों पर वैचारिक आघात किया जिसका अधिकतर शिकार स्त्रियां ही हुआ करतीं थीं। धर्मसुधार आंदोलनों के बदौलत ही समाज के पाखंडियों द्वारा निर्मित और पोषित बाल विवाह, सती प्रथा, देवदासी प्रथा, स्तन टैक्स, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, छुआछुत जैसे अमानवीय कुरीतियों के खिलाफ कड़े कानून बने और इन कुत्सित कर्मकांडों के विरुद्ध सामाजिक चेतना मुखरित हुई। राजा राम मोहन राय, स्वामी विवेकानंद, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा व सवित्रीबाई फुले, पंडिता रमाबाई जैसे लोगों ने तत्कालीन समाज में स्त्रियों की समस्याओं को दूर करने और उन्हें समाज में समानता का स्थान दिलाने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया। इसी क्रम में डॉ. भीम राव अंबेडकर ने संविधान में स्त्रियों के अधिकारों के लिए पर्याप्त संवैधानिक उपबंध करते हुए उन्हें मताधिकार दिलाने, लैंगिक भेदभाव मिटाने और समान अवसर का अधिकार दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विश्व स्तर पर तमाम प्रयासों के फलस्वरूप महिला सशक्तिकरण को बेहतर मुकाम तक पहुँचाने के लिए प्रत्येक वर्ष 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है ताकि हम इस मुद्दे पर पुनर्विचिंतन कर सकें कि हम अबतक कहाँ हैं। महिलाओं को सशक्त बनाने का तात्पर्य केवल यह नहीं है कि वे घर के चौखट से बाहर निकलकर पुरुषों के समान नौकरी या व्यापार मात्र करें अपितु उन्हें सशक्त बनाने का आशय उनके निर्णय लेने की क्षमता और अधिकार से है, चाहे वह निर्णय व्यक्तिगत जिंदगी से ताल्लुकात रखता हो या उसके आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक अथवा जीवन के किसी भी क्षेत्र से इत्तेफाक रखता हो। नारी सही मायने में सशक्त होने का दंभ तभी भर सकती हैं जब वह अपने निर्णय स्वयं ले रही हो और वह इसके लिए किसी और पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से निर्भर नहीं है। इस निर्णय लेने की क्षमता में उसकी

आर्थिक स्वतंत्रता नितांत आवश्यक है जिसके बिना वह कभी स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम नहीं हो सकती और वह कभी सशक्त नहीं हो सकेगी।

भारत में भले ही महिलाओं को आज सभी क्षेत्रों में वैधानिक रूप से समान अधिकार प्राप्त है लेकिन समाज में उन्हें आज भी इसके लिए संघर्ष करना पड़ता है। सामाजिक रूप से आज भी हमारे समाज का मूल पितृसत्ता के रूप में मौजूद है। हमारे समाज में आज भी अधिकांश परिवार में पुरुष सदस्य ही धन अर्जक सदस्य होते हैं। अधिकांश स्त्रियां प्रायः पुरुषों पर ही निर्भर होती हैं जो उनके निर्णय लेने की क्षमता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। भारतीय राजनीति में भी लंबे अरसे से पुरुषों का ही वर्चस्व रहा है। संसद और विधानसभाओं तथा अन्य प्रशासकीय निकायों में महिला प्रतिनिधियों की संख्या आज भी ऊंगलियों पर गिनी जा सकती है।

महिलाएं सभी क्षेत्रों में पुरुषों से मुकाबला तो कर रही हैं, बावजूद महिलाएं अपनी क्षमता के अनुसार अधिकार प्राप्त नहीं कर पाई हैं। ऐसी स्थिति में लड़कियों व महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति सजग होकर मानसिक रूप से भी सशक्त होना होगा ताकि वे अपने लक्ष्य तक पहुंच सकें। मानसिक रूप से सशक्त नारी ही अपने अधिकारों को समुचित उपयोग कर देश व समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पूरी तरह से निर्वहन कर सकती है।

सरकार ने महिलाओं को सशक्त व सुरक्षित बनाने के लिए कानून तो कई बना दिए लेकिन उन्हें सख्ती से लागू नहीं किया जा रहा है। अगर सरकार वास्तव में नारी सशक्तीकरण चाहती है तो सरकार महिलाओं के लिए निर्मित कानूनों जैसे – समान वेतन का अधिकार, गरिमा और शालीनता का अधिकार, कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न सुरक्षा नियमों, घरेलू हिंसा के विरुद्ध अधिकार, निशुल्क कानूनी सलाह का अधिकार जैसे कानूनों को सख्ती से लागू करें तभी महिला दिवस, महिला समानता, महिला सुरक्षा जैसे अवधारणाओं की सार्थकता सिद्ध होगी।

- कीर्ति किरण बागे
व.अनुवाद अधिकारी

“इस विश्वास में मैं जीना और मरना चाहता हूँ”

ईसाई धर्मग्रंथ 'बाइबल' से उद्धृत इस वाक्य में निहित धर्म और आस्था के मूल भाव पर मन चिंतन करना चाहता है। हम आखिर किस विश्वास में जीना और मरना चाहते हैं। धर्म के इस गूढ़ रहस्य पर थोड़ा मनन करने को जी चाहता है। वैसे तो कोई धार्मिक विचार या भाव मुझे आंदोलित या उत्साहित नहीं करते जितनी कि सामाजिक और मानवीय मुद्दे मुझे आकर्षित करते हैं। फिर भी मनुष्य जन्म से ही किसी ने किसी आस्था का हिस्सा होता है तो मैं भी एक मनुष्य के रूप में किसी आस्था विशेष का हिस्सा रहा हूँ। इस वाक्य में जिस विश्वास की बात की जा रही है, वह है ईश्वर या कोई अदृश्य परम शक्ति के अस्तित्व पर विश्वास। मैं यहां सोचना चाहता हूँ एक ऐसे विश्वास में जीना और मरना किस हद तक अर्थपूर्ण हो सकता है जिसके होने या न होने का कोई सर्वग्राह्य प्रमाण न हो। दुनिया के तमाम धर्मों के मूल में एक अदृश्य ईश्वर या शक्ति की कल्पना निहित है जिसका संपूर्ण आधार आस्था और विश्वास पर टिका है।

वैसे तो मेरे प्रारंभिक जीवन पर ग्रामीण परिवेश का गहरा प्रभाव रहा है। शहरों की तुलना में ग्रामीण समाज में धार्मिक एवं सामाजिक रूढ़ियों की जड़ें कहीं अधिक



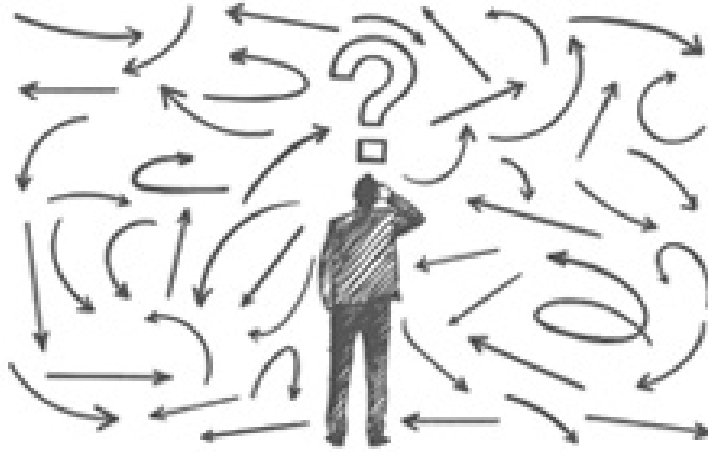
गहराई तक जमी होती हैं। शिक्षा-दीक्षा के पर्याप्त अवसर के अभाव में उनकी आस्थाएं अक्सर अंधविश्वास के हद तक चली जाती हैं। जन्म से मैं जिस समाज का हिस्सा रहा हूँ, वह भी एक ऐसा ही धार्मिक समाज का हिस्सा है जहां धार्मिक, सामाजिक मान्यताएं जीवन की गहराईयों में रचे बसे हैं। स्वभावतः अपने जीवन क्रम में परिवार और समाज के वे सभी रीति रिवाज, परंपराएं, धार्मिक विश्वास आदि स्वतः ही अन्यो की तरह मुझमें भी आत्मसात होते गए। तब समाज द्वारा परिभाषित विश्वास, रीति-रिवाज, कर्मकांड अच्छे ही मालूम होते थे। अन्य जनों के समान मेरी भी ईश्वर में आस्था और श्रद्धा थी। कहीं कोई शंका व तर्कपूर्ण प्रश्न न थे। धीरे-धीरे जब शिक्षा-दीक्षा के क्रम में विभिन्न विचारधाराओं से मेरा साक्षात्कार हुआ, तब मन में कुछ ऐसे प्रश्न उमड़ने लगे जिनका मैं कोई तार्किक उत्तर ढूंढना चाहता था। पर ऐसे कुछ ठोस उत्तर नहीं थे जिसपर आंखे मूंदकर विश्वास किया जा सकता था। कालक्रम के साथ ही बाल्यकाल से निर्मित ईश्वर के प्रति मेरी धारणाएं क्षीण होने लगीं। कुछेक धार्मिक उन्मादों से भी साक्षात्कार हुए, जिसने धर्म और ईश्वर पर मेरे विश्वास को कमतर करने की पहल की। मैं सोचना चाहता था कि एक अदृश्य, अनिश्चित ईश्वर पर आस्था और भरोसा क्या इस हद तक किया जा सकता है कि उसकी तुष्टि के लिए मनुष्य मनुष्य से बैर मोल ले। एक दूसरे के दुश्मन बन जाएं, एक दूसरे की निंदा करें और इस उन्माद में मनुष्य के प्राण लेने से भी न हिचकें। परंतु धार्मिक आस्था का कोई भी स्तर, कोई भी पराकाष्ठा मुझे सजीव मनुष्य के समक्ष तुच्छ और हेय ही महसूस हुए। मनुष्य की अहमियत धर्म और इससे जुड़े सभी कर्मकांडों से कहीं अधिक बढ़कर हैं, ऐसी अवधारणा का मैं कायल होने लगा।

वास्तव में धर्म और उससे जुड़े कर्मकांड हमें बचपन में हमारे माँ बाप और आस पड़ोस के समाज द्वारा सिखाया जाता है। एक अबोध बच्चे के कोरे मन में यह बात ठूस दी जाती है कि यह हमारा समाज है और हमें इसी तरह जीवन जीना है। उसके अपरिपक्व मस्तिष्क में यह दर्शन कूट-कूट कर भर दिया जाता है कि धार्मिक आस्थाओं के

साथ वाद-विवाद या कुतर्क करना एक संगीन और अक्षम्य अपराध है। उसके अचेतन मन में स्वर्ग की असीम सुख और नरक की भयानक शोधक अग्नि जैसे अनदेखे पुण्य और पाप की एक ऐसी परलौकिक दुनिया की तस्वीर खींच दी जाती है जिससे वह शिक्षा के उच्चतम स्तर पर पहुंचकर भी इससे बाहर निकल पाने में सक्षम नहीं हो पाता। धीरे-धीरे यही आस्था उसके अहंकार से जुड़ जाती है, जो उसे धर्मांधता की ओर ले जाती है। यदि उसके धर्म या मान्यता की बुराई या आलोचना की जाए तो उसका अहंकार फन उठा लेता है चाहे वे प्रश्न कितने ही तर्कपूर्ण क्यों न हों। उसका अवचेतन मन यह ग्रहण करने को तैयार नहीं होता कि उसका धर्म और मान्यता कोरे विश्वास की नींव पर टिका है। तब इस यक्ष प्रश्न से अपने अहंकार को बचाने के लिए वह उन्मादी और विद्रोही हो उठता है और कई बार हिंसा का सहारा भी लेता है।

मानव समाज में धर्म और ईश्वर के प्रति मनुष्य की आसक्ति इस हद तक है कि कई बार मानवीय मूल्य धर्म के खोखले सिद्धांतों के समक्ष मूल्यहीन होकर रह जाते हैं। विश्व के अधिकांश धर्मों में आत्मा की नश्वरता और पुनर्जन्म की मान्यता है। साथ ही स्वर्ग और नरक की काल्पनिक व्यवस्था भी है। विश्वास के अनुरूप आत्मा नश्वर शरीर का रूप धारण करती है परंतु यह अजर अमर होती है। शरीर के नष्ट होने पर यह दूसरा शरीर धारण करती है। धर्म के कथित विश्लेषक इसकी व्याख्यान ऐसी धारणा और विश्वास के साथ करते हैं, मानों वे ऐसी आत्मा परिवर्तन घटना के साक्ष्य रहे हों। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, पुनर्जन्म सिंचित कर्मों का फल जैसी मान्यताएं मानव के जेहन में गहरी जड़े जमाए हुए हैं। अधिकांश धार्मिक मान्यताओं की जड़ में आर्थिक सामाजिक कारण भी निहित हैं। धर्म पर विश्वास करनेवाले निर्धन लोगों को यह घुट्टी पिलायी जाती

है कि उनकी वर्तमान निर्धनता उनके पिछले जन्मों के बुरे कर्मों का दंड है। साथ ही अगले जन्म को बेहतर बनाने के उपाय भी बताए जाते हैं कि इस जन्म में अच्छे कर्म करें। इस सिद्धांत का अनुसरण करते हुए व्यक्ति स्वयं को दोषी समझने लगता है। निर्धनों को यह भी सिखाया गया कि भगवान की भक्ति ही उनके उद्धार का मार्ग है। जो धनी थे, उन्हें यह नुस्खे बताए गए कि धन दौलत दान देकर अपने लिए पुण्य अर्जित कर सकते हैं। कई धर्म अपने अनुयायियों को यह विश्वास दिलाते हैं कि उनके कष्टों, दुःख-दर्दों को हरने और उन्हें पाप से मुक्ति दिलाने के लिए एक तारणहार, मुक्तिदाता या संकट मोचक कोई युगपुरूष या संत अवतरित होगा। धर्म द्वारा दिखाए इस सब्जबाग से मूर्तिपूजा और अवतारवाद की धारणाएं बलवती हुईं और



लोग भौतिक जीवन की सुंदरता को इसके परिपूर्णतः में जीने का मोह त्यागकर नाना प्रकार के पूजास्थलों, तीर्थस्थलों और कर्मकांडों में ईश्वर को ढूँढने में जीवन व्यतीत करने लगते हैं, जिसका अस्तित्व संदेह और अनिश्चितता के गहरे गर्त में छुपा है। 'भगवान के

घर देर है अंधेर नहीं', भगवान सब देखता है, ऊपर वाले से डरो, ऊपरवाला ही न्याय करेगा। इन वाक्यों में कहीं न कहीं मनुष्य मन की हताशा, निराशा और बेबसी ही परिलक्षित होती है जो अपने मन की तुष्टि के लिए ऐसे वाक्यों का सहारा लेते हैं। पर शायद ही उन्हें सौ प्रतिशत इनके पूरा होने का भरोसा होता है। अगर संयोगवश ऐसा कुछ हो जाता है तो उनका अदृश्य शक्ति पर विश्वास और भी अधिक बढ़ जाता है, भले ही इसके पीछे कारण कुछ और ही हो।

हमारे दैनिक जीवन में कई बार ऐसी घटनाएं घटती हैं जिनके कारण हमें ज्ञात नहीं होते और हम उन्हें चमत्कार या दैवीय करिश्मा का नाम दे देते हैं। कई ऐसे प्रश्न हैं

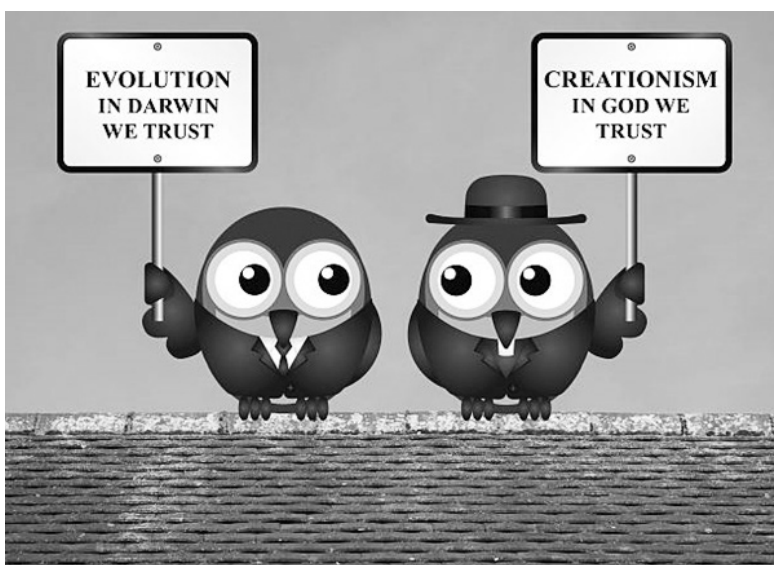
जिनके उत्तर हमारे पास नहीं हैं। लेकिन क्या प्रत्येक अनुत्तरित प्रश्नों को ईश्वर का नाम देना उचित है। क्या यह सर्वथा उपयुक्त न होता कि इसपर तार्किक व वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनायी जाती। इस स्थिति को कार्ल मार्क्स कड़े शब्दों में व्याख्या करते हुए कहते हैं: धर्म, मानव मस्तिष्क जो न समझ सके, उससे निपटने की नपुंसकता है।

धर्म के जिस स्वरूप से किसी तार्किक मन को आपत्ति हो सकती है वह है धार्मिक उन्माद जो कि एक सभ्य समाज के लिए घोर चिंता का विषय है। धर्म की अवधारणा अपने आप में तिरस्कार योग्य नहीं है परंतु धर्म के ठेकेदार और कुछेक वर्ग विशेष के लोग इसकी गलत व्याख्या प्रस्तुत कर अपनी स्वार्थ साधना का माध्यम बनाते हैं। धर्म मनुष्य के लिए जीवन जीने की एक पद्धति है जिसके मध्यम से समाज सुचारु और मर्यादित रूप से संचालित होता है। यह जीवन का एक साधन है साध्य नहीं और यही मेरे लिए धर्म की सही परिभाषा है। मैं एक ऐसी अवधारणा पर विश्वास करना चाहता हूँ जिसमें मनुष्य के आचरण एवं उसके आचार व्यवहार को संयमित और मर्यादित करने के लिए ईश्वर रूपी भय का सृजन किया गया हो।

धार्मिक उन्माद की जड़ धर्मांधता से जुड़ी होती है। मनुष्य धर्म के मद में धार्मिक अनुष्ठान, कर्मकांडों या धार्मिक आस्थाओं में इस स्तर तक डूब जाता है कि वह अपना स्वविवेक खो देता है, उसके सोचने समझने की शक्ति क्षीण हो जाती है और इस मद में चूर होकर वह स्वधर्म को श्रेष्ठ और अन्य धर्मों को तुच्छ समझने लगता है। मानवीय मूल्यों के मायने उनके समक्ष शून्य हो जाते हैं। मनुष्य का यह धार्मिक उन्माद या धर्मांधता किसी न किसी मानव समूह का अहित ही करता है।

धार्मिक उन्माद स्वयं में अहितकारी व विनाशकारी नहीं होता। यह उपयोगकर्ता के मंशा पर निर्भर करते हुए हितकारी या अहितकारी हो सकता है। यदि धार्मिक उन्माद लोगों को मानव मूल्यों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाए और उन्हें मानवानुकूल व्यवहार करने को प्रेरित करे तो यह हितकारी हो सकता है। जबकि इसके विपरीत यदि मनुष्य धार्मिक उन्माद में पड़कर मानवीय मूल्यों की अवहेलना करे, मनुष्य को धर्म से ऊपर रखे, तो निश्चय ही यह अहितकारी और विनाशकारी हो सकता है।

वस्तुतः धर्म की नींव पूर्णतः विश्वास और आस्था पर ही टिकी है। यह मानव-जीवन की वह आचार-संहिता है, जो हमें एक सच्चे मनुष्य के रूप जीवन व्यतीत करने का मार्ग



प्रशस्त करती है। हमारे भीतर के स्वाभावगत नकारात्मक आचरण को संयमित करती है और समाज को संतुलित रूप से सभ्य बनाए रखने और इसे संचालित करने में उत्प्रेरक का कार्य करती है। देखा जाए तो दुनिया के तमाम धर्मों के मूल में यही शिक्षा निहित है। धर्म के कुछ

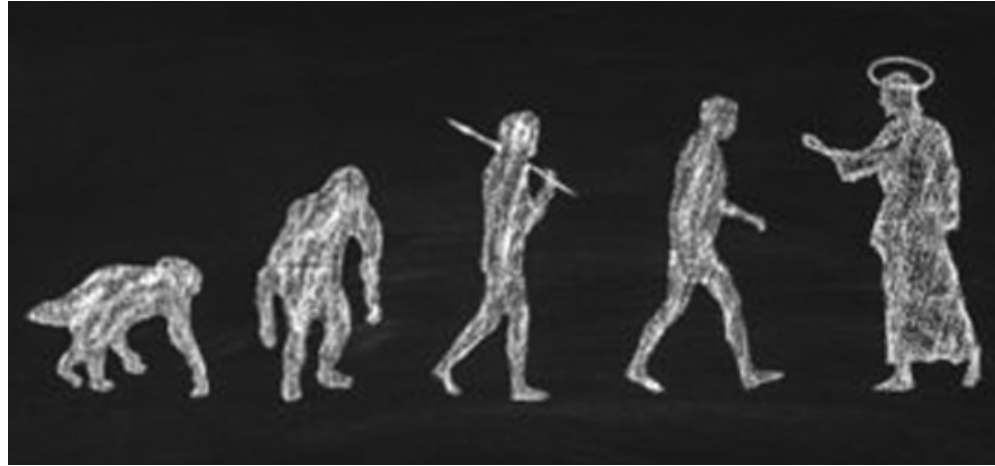
सिद्धांत जैसे अनैतिक कार्य न करना, किसी प्राणी मात्र को दुख न पहुँचाना, हिंसा न करना, सभी जीवों को समान समझना, क्रोध, घृणा, द्वेष न करना, सहनशील बनना, अभिमान न करना आदि ऐसे सिद्धांत हैं जो मानव समाज की सभ्यता को पोषित करने के लिए आवश्यक हैं। धर्म हमारे सभी कर्म, व्यवहार, करुणा, क्रोध, स्नेह, दया, त्याग, तप, आदि का बोधक है और इसी के सहारे सभी मानव व्यापार निष्पादित होते हैं।

ईश्वर या अदृश्य शक्ति पर विश्वास केवल एक अवधारणा नहीं है अपितु यह एक हद तक मानव समाज की सभ्यता का आधारस्तंभ है। विश्वास एक ऐसी भावना है जहां तर्क की कोई गुंजाइश नहीं है। तर्क और आस्था

बहुत दूर तक साथ नहीं चल सकते। परंतु विश्वास और अंधविश्वास समान नहीं है। दोनों के बीच सैद्धांतिक फर्क का स्तर अत्यंत गहरा है। जब ईश्वर पर विश्वास स्वभाविक तर्क और अनुभव पर हावी होने लगता है, तब विश्वास अंधविश्वास का रूप ले लेता है। जब हम यह कहते हैं कि समस्त सृष्टि ईश्वर द्वारा सृजित है, मनुष्य ईश्वर के संतान हैं, वही इसका पालनहार और विनाशकर्ता है तो यह आस्था है, विश्वास है। परंतु जब कहते हैं कि ईश्वर का अस्तित्व है और वह हमारी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए केवल मंदिरों,

उत्प्रेरक हो। परंतु जब भगवान पर विश्वास या आस्था मनुष्य या समाज को ऐसे कर्मकांडों या आचरण के लिए प्रेरित करे जिससे दूसरों का अहित हो तो यह किसी भी स्वरूप में स्वीकार्य नहीं है।

आज हम आधुनिक होने का दम चाहे कितना भी भर लें परंतु यहां ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो ईश्वर के नाम पर अंधविश्वास फैलाकर अपना हित साधते हैं और वैसे लोगों की भी कमी नहीं है जो किसी दूसरे के द्वारा परिभाषित धर्म पर अंधों की तरह चलने को आतुर रहते हैं। मनुष्य कागजों पर भले ही शिक्षित हो गया हो परंतु आज भी वह कहीं भीतर से अशिक्षित ही रह गया है। आंतरिक शिक्षा की ज्योत हमारे विवेक को ज्योतिर्मय कर पाने में सफल नहीं हो पाई है।



मस्जिदों, गुरुद्वारों, गिरजाघरों, तीर्थस्थानों या देवस्थानों और मूर्तियों, पेड़ों, नदी-नालों आदि में ही वास करता है, तो यह अंधविश्वास है। ईश्वर के इस असत्य स्वरूप को सत्य मानने वाले ही अंधविश्वासी बनने की ओर अग्रसर होते हैं और जो समस्त सृष्टि में ही ईश्वर की उपस्थिति महसूस करते हैं, वही सच्चे आस्तिक होते हैं।

मैं इस अवधारणा का पक्षधार होना चाहता हूँ कि किसी अदृश्य शक्ति या भगवान में विश्वास उस हद तक ही स्वाकार्य हो सकता है जितनी कि मानव समाज को एक सभ्य समाज के रूप में संचालित करने के लिए यह

हम मनुष्य हैं, जिसके पास तर्कशक्ति है, बुद्धि-विवेक है। स्वभावगत ही मनुष्य का मन एक खोजी मन है। दुनिया के सभी छोटे-बड़े अविष्कार मनुष्य की तर्कशक्ति के ही परिणाम हैं। बड़े-बड़े पुल, इमारतें, सड़कें, हवाई जहाज, सैटेलाइट आदि जैसी तमाम वैज्ञानिक कृतियां हमारे सवालियों के ही प्रत्युत्तर हैं। फिर क्यों हम ईश्वर के मामले में पूरी तरह रूढ़िवादी ही बने रहना चाहते हैं। यह चिंतन का विषय हो सकता है।

– राजेश एक्का
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

अपनी आय का दशमांश हमेशा बचाते चलो,
कभी आर्थिक संकट का सामना नहीं करना पड़ेगा।

– चाणक्य

चाय पर चर्चा

चाय हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। हम हर स्थिति को हल्का करने के लिए या उस क्षण को जी लेने के लिए चाय का ही सहारा लेते हैं। चाय भी हमारे जीवन की ही तरह विभिन्न प्रकार के होते हैं- लाल चाय, दूध चाय, बिना चीनी चाय, बिना दूध और चीनी की चाय, कड़क चाय, मसाला चाय, कुल्हड़ वाली चाय, तंदूरी चाय, नींबू



चाय, ग्रीन टी, खराब चाय, रामपियारी चाय। जैसे कहते हैं न स्थान बदलते ही पानी का स्वाद बदल जाता है वैसे ही राज्य बदलते ही चाय के प्रकार और स्वाद भी बदल जाते हैं।

चाय सिरदर्द में, मन के दर्द में, शरीर और मन के थकान में, प्यार में, इजहार में, दोस्ती में, अजनबी में, पर्व त्योहार में, मेहमान नवाजी में, तकरार में, सुलह में, ऑफिस में, यारों में, बूढ़ों में, प्रेमी-प्रेमिका में, सास-बहू में, पति-पत्नी में, गरीबी में, अमीरी में, मोटापा में, थकान में, चिड़चिड़ाहट में, कहानी की किताब के साथ चाय का स्थान महत्वपूर्ण है।

वक्त बदलता है, उसके साथ-साथ हर चीज बदलती चली जाती है। आज हम जो चाय पीते हैं बाज़ार से देख और सूँघ कर ले आते हैं। उसका एक लंबा इतिहास रहा है, जैसा कि हम सब जानते हैं आज से लगभग 4700 वर्ष



पहले चीन में चाय का आविष्कार किया गया था। इसके आविष्कारक के रूप में शेन नुंग (Shen Nung) को जाना जाता है। 9वीं शताब्दी तक चाय को चीन ने गुप्त रखा था। इनके यहाँ मेहमान नवाजी में चाय तो दिया जाता था परंतु किसी को बताया नहीं जाता था कि यह है क्या चीज? पर साहब, चाय को कौन छुपा पाया है आजतक? जो चीन वाले इसे छुपा लेते। एक बौद्ध भिक्षुक को इसका पता चल ही गया और उन्होंने इसे जापान में बता दिया। अर्थात् अब चाय जापान में जा पहुंची। जापान के बाद

लगभग 16वीं शताब्दी में यह चाय यूरोप पहुंचा। सितंबर 1658 को Mercurius politics पत्रिका में चीन के चाय का विज्ञापन छपा गया था। चाय की शुरुआत हुई चीन में, फिर यह गई जापान और फिर यह पहुंची लंदन। अब भारत में चाय को कैसे अपनाया गया यह बात हम जानते हैं। सन् 1815 ई. में कर्नल लैटर ने देखा कि असम के कुछ लोग चाय जैसा कुछ पीते हैं। सन् 1823 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी में काम करने वाले मेजर रॉबर्ट ब्रूस को अरुणाचल प्रदेश के ट्राइबल राजा जो उनके मित्र थे उनके एक बार बीमार पड़ने पर चाय को उन्हें दवाई के रूप में देते हैं। चाय पीकर ब्रूस ठीक भी हो जाते हैं। इसके बाद उनकी दिलचस्पी चाय में बढ़ जाती है। इसके बाद वे अरुणाचल प्रदेश के चाय के पेड़ को कोलकाता के बोटानिकल गार्डन में भेजते हैं कि इसे उगाया जा सके परंतु अज्ञानता के कारण पौधा मर जाता है। ब्रूस दुबारा इसे 1831 Agriculture-Horticultural Society of India, Kolkata को भेजते हैं परंतु इसे चाय का पेड़ मानने के लिए अंग्रेज सरकार राजी नहीं होती है। सन 1834 ई. को चार्ल्स रॉबर्ट ब्रूस के भाई चार्ल्स अलेक्जेंडर ब्रूस द्वारा दुबारा चाय के पौधे को कोलकाता के बोटानिकल गार्डन

में भेजा जाता है और उस समय क्रिसमस के समय में इसे पहचान कर इसका नाम 'असम टी' (camellia sinensis) का नाम दिया जाता है।

इसके बाद क्या था, ईस्ट इंडिया कंपनी को व्यापार करने का एक नया सामान मिल जाता है। अंग्रेजों द्वारा कोलकाता में चाय के बागान बना दिए जाते हैं और देखते ही देखते भारतीय मजदूरों पर शोषण करते-करते विदेशों में भी चाय का निर्यात किया जाता है। अंग्रेजों द्वारा चाय के बागानों का नवीकरण भी किया जाता है। कुछ ही दिनों में भारत चीन के रिकार्ड को तोड़ते हुए चाय के उत्पादन में अग्रणी स्थान प्राप्त कर लेता है।

ये तो रही चाय संबंधी संक्षिप्त इतिहास, अब वर्तमान में लौट आते हैं। आज चीन की चाय घर-घर की बात हो गई है। चाय से ही रिश्ते तय होते हैं। नए दोस्त बनते हैं। डॉक्टर की सुनो तो चाय कॉफी से दूर रहना चाहिए, इसमें कैफीन नामक पदार्थ होता है। जिसे अधिक पीने से नर्व कमजोर हो जाते हैं। अरे जी, भाड़ में जाए डॉक्टर की हिदायत बस हमें तो चाय पीनी है। ठंड में रजाई में चाय, गर्मी में मुहल्ले के दोस्तों के साथ चाय, बारिस में पकौड़े के साथ चाय, सबह उठने के साथ-साथ माताजी या पत्नी

के हाथ की मस्त चाय, शाम की चाय, ऑफिस की फीकी चाय, ऑफिस के बाहर की मस्त चाय।

आज के समय में चाय एक बहुत बड़ा व्यापार बन गया है। कोई भी चायवाला अब लाखों में खेलता है। छोटी दुकान ऊंचा पकवान। चाय और चाय की दुकान अब एक ब्रांड है। अब बड़े-बड़े दुकानों में विभिन्न प्रकार के स्वाद और सुगंध की



चाय की खरीद की जाती है। चाय के शौकीन चाय पर विभिन्न प्रकार के प्रयोग करते ही रहते हैं। चाय के रंग, स्वाद एवं प्रकार में दिन व दिन नवीनता आ रही है। ये एक अच्छी बात भी है।

भोर चार बजे से ही गली के नुक्कड़ पर, सड़क किनारे या फिर मुहल्ले में चाय की दुकानें खुल जाती हैं। लोगों को तलब लगनी शुरू हो जाती है। सारा दिन लोगों की भीड़ चाय की दुकानों पर बनी रहती है। चाय भी हरिवंश राय बच्चन की 'मधुशाला' की ही तरह पीने और पिलानेवालों के बीच कोई भी जातपात का भेद नहीं करती। याद रहे जी, हर खाने पीने का निश्चित समय होता है। हम हर खाने को नाश्ता, दोपहर के भोजन और रात के भोजन में बाँटते हैं पर चाय की ऐसी कोई सीमारेखा नहीं होती है इसलिए तो कहते हैं- "Every Time is a Tea Time."



निष्कर्ष के रूप में अगर आपसे पूछ ही लूँ कि चाय क्या है? क्या यह सिर्फ चाय, पानी, चीनी और दूध की जुगलबंदी है मात्र। आप कहेंगे नहीं जी यह सुकून है, एनर्जी ड्रिंक है, नींद भगाने की दवाई है, एक स्वस्थवर्धक दवाई है, मोटापा कम करने की टॉनिक है, मेल-मिलाप की मिठास है, अतिथि सत्कार में कुछ मीठा हो जाए वाला

भाव है। बड़े-बड़े गंभीर मुद्दे भी चाय पर चर्चा से ही सुलझ जाते हैं। मैं समझता हूँ कि चाय पृथ्वी की अमूल्य निधि है। देवता इससे वंचित हैं। उन्होंने बस सोमरस चखा। चाय तो उन्होंने पी ही नहीं और ऐसी कोई पूजा भी नहीं होती जिसमें देवता को चाय की पेशकश की जाती हो। दूध पी

लेते हैं और चीनी भी खा लेते हैं। पर चाय उनके नसीब में नहीं है। चाय तो बस नसीबवाले पिया करते हैं हुजूर !

– शांत्वनु नाथ
कनिष्ठ अनुवादक

हिंदी से किसी भी भारतीय भाषा को भय नहीं है,
यह सबकी सहोदरा है।

– महादेवी वर्मा

एक यात्रा विस्टाडोम से

भारतीय रेल की एक मनमोहक एवं महत्वपूर्ण रेल व्यवस्था है विस्टाडोम रेल। यह पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई है। यह व्यवस्था यात्री सुविधा के ध्यान में रखकर उन्हें प्रकृति की सुन्दरता को दिखाने के लिए की गई है। बहुत से पर्यटन मार्गों पर विस्टाडोम कोच जिसे हाफ मैन बुश कोच भी कहते हैं, चलाई जा रही है। इन कोचों में साइड विन्डो काफी चौड़े होते हैं जिनसे



पर्यटकों को पटरियों के किनारे दोनों तरफ प्राकृतिक दृश्य को देखने में काफी आसानी होती है।

पिछले साल अक्टूबर के महीने में हमलोगों ने विस्टाडोम द्वारा न्यू जलपाईगुड़ी से अलीपुरद्वार तक की यात्रा करने का विचार किया। दरअसल हमारा प्लान था उत्तर बंगाल और असम के मध्य में स्थित जलदापाड़ा नेशनल पार्क देखने का जो अलीपुरद्वार के काफी करीब था। हमलोग रात की गाड़ी से न्यू जलपाईगुड़ी गए। हम सुबह-सुबह तैयार होकर स्टेशन पहुँचे। विस्टाडोम न्यू जलपाईगुड़ी-अलीपुरद्वार जंक्शन पर्यटक ट्रेन बगल वाली प्लेटफार्म से छोड़ने वाली थी। हम ट्रेन में जाकर बैठ गए। नियत समय करीब 07.20 बजे विस्टाडोम ने न्यू जलपाईगुड़ी से अपनी यात्रा शुरू की। यह ट्रेन न्यू जलपाईगुड़ी से खुलकर सिलीगुड़ी जंक्शन, सेवक, न्यू माल जंक्शन, चालसा, मदारीहाट, हसीमारा एवं राजाभातखावा होकर अलीपुरद्वार जंक्शन करीब 12.30 बजे तक जाती

है। वहां से यह ट्रेन दोपहर 2 बजे खुलती है और न्यू जलपाईगुड़ी शाम को 7 बजे पहुंचती है।

न्यू जलपाईगुड़ी एवं सिलीगुड़ी शहर को छोड़कर जब यह ट्रेन तराई की ओर बढ़ती है तो चारों तरफ हरियाली से भरे पहाड़ दिल को काफी सुकून देते हैं। इसके बाद बगल से बहती हुई सेवक नदी, तिस्ता नदी और कालजयी नदियों की साफ और कलकल करती धारा मन को मोह लेती है।

यात्रियों को विश्व स्तरीय अनुभव देने के लिए भारतीय रेल के विभिन्न भागों में 57 विस्टाडोम कोच चलाए जा रहे हैं। जिनमें प्रमुख मार्ग है कालका-शिमला, गुवाहाटी-बदरपुर, विशाखापत्तनम-अराकु, गुवाहाटी-नाहरलागुन एवं न्यू जलपाईगुड़ी-अलीपुरद्वार। इन पर्यटन ट्रेनों की विशेषता यह है कि ये हर एक स्टेशन पर काफी समय रुकती हैं जिससे यात्री प्रकृति का भरपूर आनन्द ले सकें।

इस यात्रा में हमारी ट्रेन सबसे पहले न्यू जलपाईगुड़ी से खुलकर सिलीगुड़ी जंक्शन पर रुकती है। यहीं से जंगल की शुरुआत हो जाती है। शहरी अंचल के बाद आस-पास चारों ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है। सिलीगुड़ी के बाद गाड़ी सेवक स्टेशन पर रुकी। यहां पर यह ट्रेन 10 मिनट तक रुकती है। यह स्टेशन पहाड़ों की



तराई पर बसा हुआ है। बगल से सेवक नदी बहती जा रही है और पास ही रोड ब्रिज भी दिखाई देती है जो सेवक नदी के उपर बनी हुई है। यह ब्रिज अंग्रेजों के समय का बना हुआ और उत्तर पूर्व भारत का महत्वपूर्ण ब्रिज है।

हमारा अगला स्टेशन था न्यू माल जंक्शन, यहां ट्रेन थोड़े समय करीब 5 मिनट के लिए रुकती है। स्टेशन को फूलों के पौधों से सजाया गया है जो मन को काफी खुश कर देते हैं। हमलोग थोड़े चाय पान के लिए नीचे उतरे, उतरने के बाद चारों तरफ बिखरे हरी-हरी वादियों का आनन्द लिया।

इसके बाद हम लोग पहुंचे चालसा स्टेशन। इस

स्टेशन पर यह ट्रेन करीब 20 मिनट के लिए रुकती है। यहां आस-पास चाय के बगानों की भरमार थी। छोटे-छोटे चाय के पौधे और

उनके बीच से जाती हुई छोटी-छोटी कारियाँ काफी सुन्दर दिखाई दे रही थीं। चाय के बागानों में काम करने वाली महिलाओं के समूह एक साथ काम कर रहे थे। उनके पीछे लगे हुए बेंत की बनी हुई टोकरियां चाय की पतियों से भरी हुई थी। हमलोग थोड़े समय के लिए फोटोग्राफी करने उतर गए।

अगला पड़ाव था, मदारीहाट स्टेशन। यहां पर यह ट्रेन

करीब 10 मिनट का समय देती है। यह स्टेशन पर्यटन की दृष्टि से बहुत ही गुरुत्वपूर्ण है। यहां से उत्तर बंगाल के कई पर्यटन स्थलों की ओर जाया जा सकता है। ट्रेन से काफी संख्या में यात्री यहां उतर गए।

अगला स्टेशन था हसीमारा स्टेशन। यह स्टेशन भौगोलिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण स्टेशन है। यहां से भारत के पड़ोसी देश भूटान की सीमा केवल 17 किलोमीटर है और सड़क के रास्ते जुड़ा हुआ है। यह देश भारत का एक प्रमुख पड़ोसी देश है जिसके साथ भारत के व्यापार एवं सांस्कृतिक संबंध बने हुए हैं।

हमारा अंतिम स्टेशन था अलीपुरद्वार जंक्शन जहां

हमें उतरना था। यहीं से यह ट्रेन दोबारा न्यू जलपाईगुड़ी के लिए रवाना होगी। यहां उतर कर हमें विभिन्न जगहों पर पर्यटन के लिए

जाना था जिनमें से प्रमुख थे, अलीपुरद्वार के प्रमुख पर्यटन स्थल, जलदापाड़ा नेशनल पार्क, ईस्ट कयारा बाड़ी पार्क इत्यादि। वो तो अलग यात्रा वृत्तांत में लिखी जाएगी। परन्तु विस्टाडोम द्वारा यह सुखदायक यात्रा हमेशा याद रहेगी।

– दिलीप कुमार दास
व. आशुलिपिक

यदि भारतीय लोग कला, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते हैं
तो इसका माध्यम हिंदी ही हो सकती है।

– चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

निद्रा

नींद का मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है – मनुष्य अपने जीवन का एक-तिहाई भाग सोते हुए गुजारता है। नींद में परिवर्तन होने का प्रभाव मनुष्य की कार्यक्षमता तथा उसके स्वास्थ्य पर पड़ता है।

आज के भाग-दौड़ की जिंदगी में काम, क्रोध, लोभ, मोह, असंतोष आदि मानसिक विकारों के कारण मनुष्य इतना अशांत बन चुका है कि उसको स्वाभाविक नींद के लिए भी तरसना पड़ता है। आज अनिद्रा का रोग सारे विश्व में महारोग की भांति फैलता जा रहा है। आज के दौर में नींद न आना एक आम शिकायत हो गई है। डॉक्टरों के पास नियमित ऐसे रोगी आते हैं जिनकी खास शिकायत नींद न आने की होती है जिससे अनेक बीमारियां उत्पन्न होती हैं।

नींद एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा शरीर आराम पाता है। गहरी नींद से व्यक्ति अपने आपको तनाव रहित पाता है क्योंकि उससे दिमाग और शरीर को पूर्णरूप से आराम मिल जाता है। जब हम प्रातः सोकर उठते हैं तो हमारा दिमाग हल्का-फुल्का एवं शरीर तरोताजा रहता है।

यदि हम रात में ठीक तरह से नींद नहीं ले पाते हैं, तो हमें प्रातःकाल से ही सुस्ती अनुभव होती है। हाथ, पैर तथा सिर दर्द करता है। आँखें भारी-भारी रहती हैं एवं किसी भी कार्य में मन नहीं लगता है अर्थात् रात के साथ-साथ अगला दिन भी बेकार चला जाता है। यदि कई दिनों तक नींद नहीं आती है तो मनुष्य पागल हो जाता है। जितनी खुराक हमें नींद से मिलती है उतनी अन्य किसी वस्तु से नहीं।

दिमागी स्वास्थ्य के विशेषज्ञ कहते हैं कि आज के बहुत ज्यादा व्यस्त और उलझन भरे जीवन के लिए जरूरी है कि नींद की आवश्यकता और उसके महत्व का ध्यान रखा जाए। दिमागी संतुलन और स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए कम-से-कम 6 घंटे नींद आवश्यक है।

अलग-अलग व्यक्तियों के लिए नींद की आवश्यकता अलग-अलग होती है, जैसे – एक माह के बच्चे को 21 घंटे, 6 माह के बच्चे को 18 घंटे, 12 माह के बच्चे को 12 घंटे, 12 वर्ष से ऊपर वाले बच्चे को 10 घंटे, 16 वर्ष से ऊपर

वाले को 8 घंटे तथा 30 वर्ष से ऊपर वाले को 6-7 घंटे सोना चाहिए तथा उससे अधिक उम्र वाले को 5-6 घंटे सोना चाहिए। शारीरिक व मानसिक श्रम करने वाले को अधिक नींद आती है।

अनिद्रा के अतिरिक्त अधिक देर तक सोया रहना भी आलस्य की निशानी है तथा स्वास्थ्य के लिए अहितकर है, डॉक्टरों के अनुसार अधिक सोने से रक्त प्रवाह प्रभावित होता है अर्थात् धीमा पड़ जाता है। परिणास्वस्वरूप हृदय रोग उत्पन्न हो सकते हैं, फेफड़े कमजोर हो जाते हैं।

अच्छी नींद प्राप्त करने के लिए दवाओं का सहारा लेना अच्छी बात नहीं है। नींद की गोलियां खाने से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। नींद की गोलियों के सेवन के विषय में एक प्रसिद्ध व्यक्ति का कहना है कि यदि आपको पांच घंटे की नींद आती है और आप इसे सात घंटे करने के लिए नींद की गोली का प्रतिदिन सेवन करते हैं, तो कुछ दिन तो आपकी नींद सात घंटे की हो जाएगी किन्तु कुछ समय बाद आपको पांच घंटे की नींद के लिए भी परेशानी होगी। वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि पूर्व दिशा में सिर रखकर सोने से शांत और सुखमय नींद आती है।

अच्छी नींद के लिए उपाय

- सोने और जागने का समय निर्धारित करें ...
- माहौल ऐसा बनायें जिसमें आपको आसानी से नींद आ जाए ...
- आरामदायक बिस्तर पर सोएँ ...
- नियमित व्यायाम करें ...
- कैफीन वाली चीजों को कम लें ...
- धूम्रपान न करें ...
- जरूरत से ज्यादा खाना न खायें ...
- सोने से पहले थोड़ा रिलैक्स करें

– मानसिंह मेलगन्डी
निजी सचिव-॥

गज़ल सम्राट – पंकज उधास

*चिट्ठी आयी है, आयी है चिट्ठी, आयी है
चिट्ठी आयी है वतन से चिट्ठी आई है।'*

सन् 1986 में रिलीज हुए हिंदी फिल्म 'नाम' में पंकज उधास का यह गज़ल बहुत ही प्रचलित हुआ था। उसके बाद से उन्होंने कई फिल्मों के लिए एक पार्श्व गायक के रूप में अपनी आवाज दी है। इसके अतिरिक्त उन्होंने कई एल्बम भी रिकॉर्ड किये हैं और एक कुशल गज़ल गायक के रूप में पूरी दुनिया में अपनी कला का प्रदर्शन भी किया है। इस गज़ल से उनको अत्यधिक प्रसिद्धि मिली। फिल्म के हर आशिक की जुबान पर यह गज़ल चलता रहता था। वैसे उस समय पंकज उधास की ख्याति चरम पर थी। जाड़ा हो या गर्मी, जहां कहीं भी उनका कार्यक्रम होता, लोग चादर-कंबल, पानी का बोतल लेकर उनके कार्यक्रम देखने जाते और रात-रात भर जागकर उनकी गज़लें सुनते रहते थे। मैं भी एक बार पटना के गांधी मैदान में आयोजित उनका कार्यक्रम देखने गया था। यद्यपि मैं यह सोच कर गया था कि एक-दो घंटे देख कर चला आऊंगा, पर उनके गले में इतना सम्मोहन था कि देखते-देखते सारी रात बीत गयी और मैं टस-से-मस नहीं हुआ।

पंकज उधास का जन्म 17 मई, 1951 को गुजरात के चारखड़ी-जैतपुर में हुआ था। उनके पिता केशूभाई उधास एक सरकारी कर्मचारी थे। उनकी माँ का नाम जीतूबेन उधास है। वे तीन भाइयों में सबसे छोटे थे। उनके सबसे बड़े भाई मनहर उधास रंगमंच के एक अभिनेता थे और सिने जगत में हिंदी पार्श्व गायक के रूप में भी सफलता प्राप्त की थी। उनके दूसरे बड़े भाई निर्मल उधास भी एक प्रसिद्ध गज़ल गायक हैं और तीनों भाइयों में से सबसे पहले गायिकी का काम उन्होंने ही शुरू किया था। उन्होंने भावनगर से शिक्षा प्राप्त की थी। उसके बाद में उनका परिवार मुंबई आ गया और उनकी उच्च शिक्षा मुंबई के सेंट जेवियर्स कॉलेज में हुई जहां उन्होंने विज्ञान स्नातक डिग्री की पढ़ाई पूरी की।



अपने बचपन में उधास अपने पिता को दिलरुबा वाद्य बजाते देखते थे। संगीत में उनकी और उनके भाइयों की रुचि को देखते हुए उनके पिता ने उन्हें राजकोट में संगीत अकादमी में दाखिला दिला दिया। शुरू में उनकी चाहत तबला सीखने की थी पर बाद में उन्होंने गुलाम कादिर खान साहब से हिंदुस्तानी मुखर शास्त्रीय संगीत सीखना शुरू किया। इसके बाद वे ग्वालियर घराने के गायक नवरंग नागपुरकर के संरक्षण में प्रशिक्षण लेने के लिए मुंबई चले गए। संगीत नाट्य अकादमी से उन्होंने तबला बजाने की बारीकियों को सीखा। समय निकालकर वे गायन का अभ्यास करते रहे। उन्होंने 1972 में फिल्म 'कामना' में पहली बार गाया था जो कि एक असफल फिल्म रही थी। रंगमंच पर

उनका पहला प्रदर्शन भारत-चीन युद्ध के दौरान हुआ जिसमें उन्होंने *"ऐ मेरे वतन के लोगों"* गाया जिसके लिए एक दर्शक द्वारा उनको पुरस्कार स्वरूप 51 रुपये का इनाम भी दिया गया। गज़ल गायक के रूप में अपना करियर बनाने के लिए उन्होंने उर्दू भी सीखी। फिर भी उन्हें सफलता

नहीं मिली। फिर वे कनाडा चले गए और वहां तथा अमेरिका में छोटे-मोटे कार्यक्रमों में गज़ल गायिकी करके अपना समय बिताने के बाद वे भारत आ गए। फिर उन्होंने अपने गज़ल गायिकी का अभ्यास जारी रखा। उनका पहला गज़ल एल्बम 1980 में रिलीज़ हुआ था। यहाँ से उन्हें सफलता मिलनी शुरू हो गयी और 2009 तक वे 40 एल्बम रिलीज़ कर चुके हैं।

पंकज उधास को 1985 से 2006 तक 18 विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उनके छोटे-बड़े कुल 28 एल्बम उपलब्ध हैं। मशहूर गज़ल गायक पंकज उधास 72 साल की उम्र में 26 फरवरी, 2023 को इस दुनिया को अलविदा कह चल दिए। उनका जाना देश की अतुलनीय क्षति है।

– रंजीत कुमार सिन्हा
सेवानिवृत्त मुख्य टंकक

निखर-निहार-निहाल अयोध्या

496 वर्ष बाद रामलला का अपनी जन्मभूमि पर पुनरस्थापित होना जितना अपूर्व है उतना ही अपूर्व अयोध्या का वह मंदिर है जिसमें रामलला की स्थापना की गई है। स्वतंत्रता के बाद से ही रामलला भूमि के रूप में शुरू होने वाला न्यायिक संघर्ष तो 120 x 90 फीट की ही भूमि का था किन्तु 22 जनवरी 2024 को रामलला जिस मंदिर में विराजमान हुए वह 360 फीट लम्बा और 250 फीट चौड़ा भव्यता का प्रतिमान गढ़ने वाला है। भव्यता के पर्याय सिंह द्वार के सम्मुख स्तंभ की न्यूनता और आराध्य की अनंतता का द्योतक होता है।

पुलकित तन और मुदित मन अवधपुरी सनातन संस्कृति के प्रतीक पुरूष का आह्वान कर चुकी है। मंगल गान हो रहा है। घर-घर में बधाई बज रही है और सोहर गूंज रहे हैं। योग, लग्न, ग्रह, वार और तिथि सभी अनुकूल हैं। शीतल, मंद और सुगंधित पवन के संस्पर्श से जड़-चेतन सब आनंद से भर गए हैं। संत-महंत हर्षित हैं और पुरवासी पुलकित-प्रफुल्लित। दुंदुभी के साथ शहनाई की मंगल-ध्वनि के बीच आकाश से पुष्प वर्षा हो रही थी। धमाधम नगाड़े बज रहे थे और दिग्विजय का शंखनाद हो रहा था। जो हम पहले सिनेमा में देखते थे अब वह वस्तुतः नजरो के समक्ष दृश्यमान था। मठों-मंदिरों से अदभुत आभा फूट रही थी। पालथी मारे गोसाईं जी जैसे करबद्ध गान करने लगे हैं "भए प्रकट कृपाला, दीन दयाला। हल्दी रोली से दरवाजे पर सनातन संस्कृति के प्रतीक चिन्ह उकेर दिए गए हैं। आंगन में दीप-श्रृंखलाओं के बीच चौमुख दीप जल रहे हैं। सोलह श्रृंगार में सुहासिनें जल से भरे कलश और थालों में विविध द्रव्य सजा लाई थीं। सोमवार 22 जनवरी 2024 के मध्य रात्रि तक देश के कोने-कोने से आये कलाकारों के



नयनाभिराम प्रस्तुति से अवधपुरी आच्छादित हो रही थी और जन-मन को राम भजन में भावविभोर किए जा रहे थे।

अयोध्या में धर्म का आयोजन था तो कर्म का उत्सव भी। संस्कृति की अनुप्रेरणा थी तो साहित्य का अनुष्ठान भी। दोनों पर दया करने वाले, कौशल्या जी के हितकारी कृपालु प्रभु जैसे बाल लीला करते प्रतीत हो रहे थे। उनके अदभुत रूप-गुण का सामना होते ही शब्द कम पड़ जाते हैं, आंखें नम हो जाती हैं जो अतीत के शेक-संतप्त से मुक्ति के साथ गौरवमय वर्तमान की तुष्टि और प्रसन्नता

प्रतिपादित करती है। सरयू जी के तट पर हनुमानजी के मंदिर जटाजुट साधु मंडली राल-ताल करताल के साथ झूम रहे थे। वृंदावन से आए भक्तगण 'युग-युग जीयसु ललनवां, भवनवां के भाग जागल हो' की मधुर ध्वनि से बाल-जन्मोत्सव का मंत्रमुग्ध एवं कर्णप्रिय वातावरण

सृजित कर रहे थे।

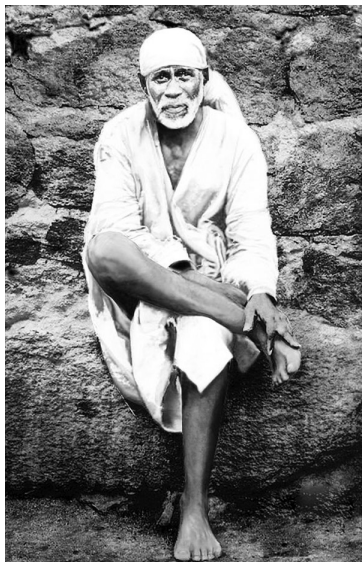
देशवासियों के मन में अतिशय प्रेत और शरीर पुलकित हो चला है एवं रामलला मानवता को शांति, प्रगति और समृद्धि का आशीर्वाद दे रहे हैं। हर भारतीय को लग रहा है कि जीवन धन्य हो गया। शताब्दियों की प्रतीक्षा और प्रार्थना अयोध्याधाम में प्रभु श्रीराम के नवीन विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा के साथ पूर्ण हो गई है। साथ ही पूरी दुनिया में दिखी राम-भक्ति। यह सिर्फ एक तारीख नहीं है बल्कि एक नए कालचक्र का उद्गम भी है। हमारी रामलला अब टेंट में नहीं दिव्य मंदिर में रहेंगे। हमें सदियों के उस धैर्य को धरोहर मिल चुकी है।

– अशोक कुमार पाण्डेय
सेवानिवृत्त वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

साईं नगर शिरडी की यात्रा

दैनिक परिश्रम करने के बाद हम सभी को ही थोड़ा भ्रमण में जाने का मन करता है। पूरा साल अपना कार्य करने तथा स्वस्थ जीवन जीने की तैयारियां करने में बीत जाता है। इस बार पूजा की छुट्टियों में मैं सोच रहा था कि कहीं घूमने जाएं? पूजा के समय बच्चों को स्कूल में दो सप्ताह की छुट्टी रहती है और उस समय मेरे कार्यालय में भी छुट्टी रहती है तभी कमरे में लगे हुए भारत के मानचित्र को दिखाते हुए कहा कि इस साल हमलोग महाराष्ट्र साईं नगर शिरडी जायेंगे।

दुर्गा पूजा के पहले दो दिन पंचमी और सप्तमी को हमलोगों ने अनेक प्रतिमाओं के दर्शन किए। अष्टमी के दिन पुष्पांजलि देकर हमलोग हावड़ा स्टेशन की ओर रवाना हो गये। हावड़ा से मुम्बई जाने वाली मेल शाम 07:40 बजे रवाना हुई। इस तरह हम लोग रेल से सफर करते हुए मान भाड़ रेलवे स्टेशन पहुंच गए फिर मानमाई से साईं नगर शिरडी जाने के लिए बस से रवाना हुए। लगभग 2 घंटे में साईं नगर शिरडी पहुंचे। हमने पहले रूम बुक कर लिया था। इसलिए हम लोग नहा-धोकर साईं बाबा की दर्शन के लिए गए। साईं बाबा की दर्शन पाकर मन में बहुत प्रसन्नता हुई। यहाँ हर साल लाखों लोग शिरडी के साईं बाबा के दर्शन करने पहुंचते हैं। साईं नाथ पर लोगों की आस्था इस कदर है कि उनके दर्शन के लिए लोग 7-8 घंटे भी लाइन में खड़े रहकर इंतजार करते हैं। मुम्बई से लगभग 300 किमी दूर स्थित शिरडी को साईं बाबा का घर माना जाता है। आपको बता दें कि साईं बाबा एक संत थे जिन्होंने जीवन भर जरूरतमंदों की सेवा की। शिरडी के साईं बाबा (1838-15 अक्टूबर 1918) को शिरडी साईं बाबा के नाम से भी जाना जाता है। यह एक भारतीय आध्यात्मिक गुरु और फकीर थे जिन्हें एक संत माना जाता था। उनके जीवन के वृत्तांतों के अनुसार साईं बाबा ने स्वयं



की प्राप्ति के महत्व का प्रचार किया और नश्वर चीजों के प्रति प्रेम को महत्ता दी। साईं बाबा ने धर्म या जाति के आधार पर भेद भाव की निंदा की। हिंदू और मुस्लिम दोनों ही उनके अनुयायी थे।

लेकिन जब उन पर अपनी धार्मिक संबद्धता के बारे में दबाव डाला गया तो उन्होंने खुद को एक के साथ पहचाने जाने से इनकार कर दिया। उनकी शिक्षाओं में हिंदू धर्म और इस्लाम के तत्वों का मिश्रण था। वे जिस मस्जिद में रहते थे उसे हिंदू नाम द्वारकामाई दिया। हिंदू और मुस्लिम दोनों अनुष्ठानों का अभ्यास किया और उन शब्दों और आंकड़ों

का उपयोग सिखाया जो दोनों परंपराओं से लिए गए थे। उनकी मृत्यु के तुरंत बाद लिखी गई जीवनी श्री साईं सच्चरित्र के अनुसार उनके हिन्दू भक्त उन्हें हिंदू देवता दत्तात्रेय का अवतार मानते थे। हमलोग उसके दूसरे दिन शनि सिंगणापुर के शनि भगवान मंदिर देखने के लिए साईं नगर शिरडी से रवाना हुए। यह मंदिर शनि भगवान का बहुत प्रसिद्ध मंदिर है।

यह मंदिर अहमदनगर जिले के नेवासा तालुका में स्थित एक गांव में है। यह मंदिर शनि ग्रह से जुड़े हिंदू देवता शनि के लोकप्रिय मंदिर के लिए जाना जाता है। यह कहा जाता है कि इस गांव के किसी भी घर या दुकान में दरवाज़ा नहीं है। कहते हैं कि यह गांव अपनी इसी खासियत से देश- दुनिया में काफी मशहूर हुआ था। सिंगणापुर यात्रा करने के बाद हम लोग उसी दिन रात 10 बजे साईं नगर शिरडी आकर अपने रूम में आराम किया। अगले दिन सुबह 6 बजे एक कार लेकर विभिन्न जगहें घूमने गये, पंचवटी, गोदावरी नदी की उद्गम-स्थान, सीता माता का वनावस स्थान, त्र्यकेश्वर जैसे स्थानों पर घूमकर आनंद लिए। मैं कहना चाहता हूँ की त्र्यकेश्वर

मंदिर का एक अलग ही कहानी है। एक बार महर्षि गौतम के तपोवन में रहने वाले ब्राह्मणों की पत्नियां किसी बात पर उनकी पत्नी अहिल्या से नाराज हो गईं। उन्होंने अपने पतियों को ऋषि गौतम का अपकार करने के लिए प्रेरित किया। ब्राह्मणों ने इसके निर्मित भगवान श्रीगणेशजी की आराधना

की। उनकी बात मानकर वे वहाँ त्र्यम्बक ज्योतिर्लिंग के नाम से स्थित हो गए। गौतमजी द्वारा लाई गई गंगाजी भी वहाँ पास में गोदवरी नाम से प्रवाहित होने लगी।

त्र्यम्केश्वर मंदिर सप्ताह के प्रत्येक दिन खुला होता है। मंदिर भक्तों के दर्शन के लिए सुबह 5 बजे खुलता है और

रात्रि 9 बजे बंद हो जाता है। मंदिर में शिवलिंग के सामान्य दर्शन 5 मीटर दूरी से किए जाते हैं। यदि कोई विशेष पूजा करना चाहता है। तो उन्हें गर्भगृह में जाने की अनुमति होती है तथा वे लिंग को स्पर्श भी कर सकते हैं। हम इस मंदिर में त्र्यम्बक ज्योतिर्लिंग का दर्शन पाकर बहुत आनन्दित हुए। फिर त्र्यम्बकेवर से



साईं नगर आनंद शिरडी उसी दिन रात 10 बजे पहुंच कर अपने रूम में अराम किया। उसके दूसरे दिन सुबह फिर साईं बाबा का दर्शन किया और कुछ सामान बाजार में खरीदा। फिर दोपहर को भोजन किया। शाम 5 बजे शिरडी से रवाना होकर हावड़ा पहुँच गए। इस तरह से हमारी इस साल की छुट्टी काफी आनंद से कटी।

साईं नगर आनंद शिरडी उसी दिन रात 10 बजे पहुंच कर अपने रूम में अराम किया। उसके दूसरे दिन सुबह फिर साईं बाबा का दर्शन किया और कुछ सामान बाजार में खरीदा। फिर दोपहर को भोजन किया। शाम 5 बजे शिरडी से रवाना होकर हावड़ा पहुँच गए। इस तरह से हमारी इस साल की छुट्टी काफी आनंद से कटी।

– पेडडा ममता राव
सामान्य सहायक

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं।
मेरे विचार में हिंदी ही ऐसी भाषा है।

– लोकमान्य तिलक

ऑरेंज लाइन के जय हिंद (एयरपोर्ट) स्टेशन का महाप्रबंधकीय निरीक्षण

महाप्रबंधक श्री पी उदय कुमार रेड्डी ने दिनांक 27.02.2024 को ऑरेंज लाइन पर निर्माणाधीन जय हिंद (एयरपोर्ट) स्टेशन का निरीक्षण किया।

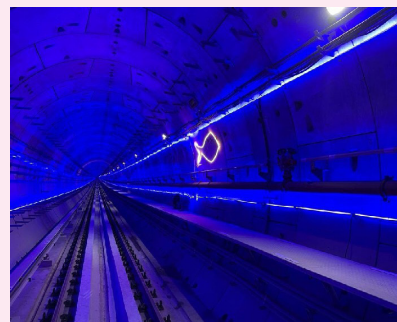
श्री रेड्डी ने पैसेंजर इंटरचेंजिंग प्वाइंट, प्लेटफार्म लेवल, कॉनकोर्स लेवल, एएफसी-पीसी गेटों की प्रस्तावित साइट आदि का निरीक्षण किया।

इस खंड पर कार्यों की प्रगति का मूल्यांकन करते हुए उन्होंने संतोष व्यक्त की और निर्धारित कार्य को समय पर पूरा करने के निर्देश दिए।



नदी तल से नीचे होने की अनुभूति कराने के लिए मेट्रो सुरंगों का प्रदीप्तिकरण

हावड़ा मैदान से सॉल्ट लेक सेक्टर V तक ईस्ट-वेस्ट मेट्रो कॉरिडोर के यात्रियों को नदी तल से गुजरने की अनुभूति प्रदान करने के उद्देश्य से चलती रेक के चारों ओर पानी का प्रभाव देने के लिए सुरंगों की भीतरी दीवारों पर नीली रोशनी से सुरंगों को रोशन किया गया है। इसके अतिरिक्त यात्रियों को नदी तल पर होने की और बेहतर अनुभूति देने के लिए सुरंगों की भीतरी दीवारों पर रोशनी युक्त मच्छलियों की आकृतियां भी बनाई गई हैं। चलती रेकों के भीतर से दीवारों पर बनी मछलियों की आकृतियां तैरती हुई सी महसूस होंगी। मेट्रो रेलवे इस अनूठी यात्रा को दिलचस्प बनाने के लिए इस खंड में कुछ विशेष ध्वनि प्रभावों के बारे में भी विचार कर रहा है।



85वीं सीनियर राष्ट्रीय एवं अंतरराज्यीय टेबल टेनिस चैंपियनशिप-2023 में मेट्रो को स्वर्ण पदक

पंचकुला, हरियाणा में आयोजित 85वीं सीनियर राष्ट्रीय एवं अंतरराज्यीय टेबल टेनिस चैंपियनशिप-2023 में मेट्रो रेल की महिला टेबल टेनिस खिलाड़ी सुश्री पोयमंती बैस्य ने एकल श्रेणी में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। सुश्री बैस्य इस चैंपियनशिप में रेलवे स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड (आरएसपीबी) का प्रतिनिधित्व कर रही थी। इस चैंपियनशिप में महिला युगल में स्वर्ण और मिश्रित युगल स्पर्धा में रजत भी जीता है। उन्होंने इस चैंपियनशिप में महिला युगल में स्वर्ण और मिश्रित युगल स्पर्धा में रजत भी जीता है।

मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री पी उदय कुमार रेड्डी ने सुश्री पोयमंती को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी और उन्हें सम्मानित किया।



मेट्रोमैन ने रणजी ट्रॉफी की एक पारी में नौ विकेट लिए

सुरत में खेले गए रणजी ट्रॉफी टूर्नामेंट में रेलवे टीम से खेल रहे मेट्रो कर्मी श्री आकाश पांडे ने एक पारी में नौ विकेट लेकर इतिहास रच दिया। मेट्रो रेलवे के अग्रिम विभाग के कर्मचारी आकाश बाएं हाथ के स्पिनर हैं और पहले अंडर-19 और अंडर-23 टूर्नामेंट में बंगाल का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। इस बेहतरीन प्रदर्शन के दम पर आकाश ने प्लेयर ऑफ द मैच का अवार्ड भी अपने नाम कर लिया। मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री पी उदय कुमार रेड्डी ने श्री आकाश पांडे को इस शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई दी है और भविष्य के सभी मैचों के लिए शुभकामनाएं दी हैं।

ईस्ट-वेस्ट मेट्रो कॉरिडोर पर एप आधारित क्यूआर कोड टिकट प्रणाली की शुरुआत

मेट्रो यात्रियों की सुविधा के लिए 02.01.2024 से ईस्ट-वेस्ट मेट्रो कॉरिडोर (ग्रीन लाइन) के सॉल्ट लेक सेक्टर V स्टेशन पर कागज आधारित क्यूआर कोड टिकट प्रणाली शुरू की गई है। यह प्रणाली रेल सूचना प्रणाली केंद्र (सीआरआईएस) द्वारा विकसित है जो मेट्रो यात्रियों के बीच पहले ही लोकप्रिय हो चुकी है। पेपर-आधारित क्यूआर कोड टिकट प्रणाली अब ईस्ट वेस्ट मेट्रो के सभी स्टेशनों पर उपलब्ध है।

मेट्रो रेलवे में स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

दिनांक 15.02.2024 को मेट्रो कर्मियों, अधिकारियों और उनके परिवार के सदस्यों की स्वास्थ्य देखभाल और जांच सुविधाएं प्रदान करने के लिए एक स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री पी. उदय कुमार रेड्डी द्वारा इस स्वास्थ्य शिविर का उद्घाटन किया गया।

इस शिविर में लिपिड प्रोफाइल और लिवर फंक्शन जांच, संपूर्ण हिमोग्राम और ब्लड शुगर, आंखों का परीक्षण, ईसीजी के साथ हृदय की स्थिति की जांच और अनुवर्ती उपचार आदि सहित रक्त परीक्षण किए गए।

मेट्रो रेल में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 127वीं जयंती मनायी गई

दिनांक 23.01.2024 को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 127वीं जयंती को 'पराक्रम दिवस' के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर नेताजी के जीवन और उनके कार्यों का स्मरण करते हुए नेताजी और श्यामबाजार मेट्रो स्टेशनों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम



के दौरान मेट्रो कर्मियों के साथ-साथ यात्रियों ने भी इस महान नेता को श्रद्धा-सुमन अर्पित की।

मेट्रो रेलवे में मना राष्ट्रीय मतदाता दिवस

मेट्रो रेलवे में दिनांक 25.01.2024 को 14वां राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया गया। लोकतंत्र में मतदान के महत्व को उजागर करने के लिए हर साल राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया जाता है। महाप्रबंधक श्री पी उदय कुमार रेड्डी ने मेट्रो रेल भवन में अधिकारियों और कर्मचारियों को मतदान की शपथ दिलाई। बड़ी संख्या में अधिकारियों और कर्मचारियों ने हर चुनाव में निडर होकर मतदान करने की शपथ ली। मेट्रो रेलवे के अन्य कार्यालयों में भी यह शपथ ली गई। मेट्रो के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से आगामी चुनाव में अपना वोट डालने का अनुरोध किया गया।



रेल संरक्षा आयुक्त का ईस्ट-वेस्ट मेट्रो का निरीक्षण



रेल संरक्षा आयुक्त श्री जनक कुमार गर्ग ने दिनांक 04.01.2024 को मेट्रो रेल भवन में सभी चालू मेट्रो परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से मेट्रो अधिकारियों द्वारा उन्हें शहर में चल रही सभी मेट्रो परियोजनाओं की प्रगति के बारे में बताया गया।

बाद में उन्होंने सियालदह से सॉल्ट लेक स्टेडियम स्टेशन तक ट्रेन में निरीक्षण किया। उन्होंने एएफसी-पीसी गेट्स, टिकटिंग सिस्टम, एस्कालेटर, लिफ्ट, संकेत बोर्ड, अग्निशमन व्यवस्था आदि का भी निरीक्षण किया। निरीक्षण के पश्चात श्री गर्ग ने ईस्ट-वेस्ट मेट्रो कॉरिडोर के समग्र संचालन व्यवस्था पर प्रसन्नता व्यक्त की।

47वें अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला के दौरान विशेष मेट्रो सेवाएं

सिटी ऑफ़ जॉय के सभी पुस्तक प्रेमियों की सुविधा के लिए 47वें अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला के दौरान 18.01.2024 से 31.01.2024 तक मेट्रो ईस्ट-वेस्ट कॉरिडोर (ग्रीन लाइन) पर विशेष मेट्रो सेवाएं चलाई गईं।

मेट्रो कर्मियों को कार्डियो पल्मोनरी रिससिटेशन प्रशिक्षण

मेट्रो कर्मचारियों को जीवन रक्षक प्रणाली कार्डियो पल्मोनरी रिससिटेशन के बारे में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने उद्देश्य से मेट्रो रेल के चिकित्सा विभाग द्वारा नारायणा मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल के समन्वय से दिनांक 17.01.2024 को पार्क स्ट्रीट मेट्रो स्टेशन पर एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉक्टरों और अन्य चिकित्सा कर्मचारियों ने -मैनिकिन और ऑटोमेटेड एक्सटर्नल डिफिब्रिलेटर मशीन की मदद से इस बुनियादी जीवन रक्षण प्रणाली पर प्रशिक्षण दिया। मेट्रो रेल के यातायात और सुरक्षा विभागों के चालीस से अधिक कर्मचारियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। उम्मीद है कि इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम से फ्रंटलाइन मेट्रो कर्मचारियों को आपात स्थिति में यात्रियों की मदद करने में सहायता मिलेगी।



मेट्रो स्टेशनों पर अग्निशमन प्रशिक्षण कार्यक्रम

मेट्रो रेल यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का हर संभव उपाय करती है। मेट्रो परिसर में किसी प्रकार की आगजनी की स्थिति से निपटने में मेट्रो कर्मचारियों की कुशलता को बेहतर करने हेतु नियमित रूप से अग्नि प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। ऐसे दो प्रशिक्षण कार्यक्रम 18.01.2024 और 16.01.2024 को कवि सुभाष, सॉल्ट लेक स्टेडियम और फूलबागान स्टेशनों पर वरिष्ठ अधिकारियों की देखरेख में आयोजित किए गए।

मेट्रो रेलवे में मना शहीद दिवस मनाया

मेट्रो रेलवे में दिनांक 30.01.2024 को शहीद दिवस मनाया गया। इस अवसर को यादगार बनाने के लिए दो मिनट का मौन रखा गया।

मेट्रो रेल अधिकारियों, कर्मचारियों और यात्रियों ने महात्मा गांधी और देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले सभी शहीदों को सम्मान देने के लिए मौन रखा।

मेट्रो रेलवे में 75वां गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन

26 जनवरी, 2024 को मेट्रो रेलवे, कोलकाता में 75वां गणतंत्र दिवस उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया। मेट्रो रेल के महाप्रबंधक श्री पी. उदय कुमार रेड्डी ने मेट्रो रेल भवन प्रांगण में राष्ट्रीय ध्वज फहराया और मेट्रो रेलवे सुरक्षा बल की सलामी ली।

मेट्रो रेल के अधिकारियों, कर्मचारियों तथा मीडियाकर्मियों को संबोधित करते हुए उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में मेट्रो रेल की शानदार उपलब्धियों और इसके गौरवशाली अतीत की चर्चा की।

कार्यक्रम के पश्चात महाप्रबंधक और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में कैटीन सहायक श्रीमती अंजना सिकंदर द्वारा मेट्रो भवन

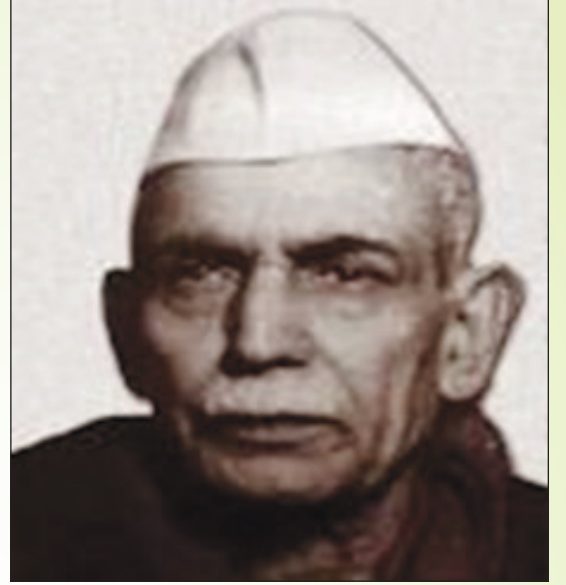
स्थित नवनिर्मित कैटीन 'अन्नपूर्णा' का उद्घाटन किया गया। इसके साथ ही महाप्रबंधक की उपस्थिति में मोहम्मद अरशद हुसैन, वरिष्ठ अनुभाग इंजीनियर और श्री अरूण कुमार सिंह, व.अनुभाग इंजीनियर द्वारा मेट्रो रेल भवन के बेसमेंट में एक नई कार पार्किंग सुविधा का भी उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर टॉलीगंज कर्मचारी आवास परिसर में व्यायामशाला एवं शिशु उद्यान का भी उद्घाटन किया गया।



हिन्दी के हस्ताक्षर

पंडित माखन लाल चतुर्वेदी

पंडित माखन लाल चतुर्वेदी सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के अनूठे हिन्दी रचनाकार थे। इन्होंने हिन्दी एवं संस्कृत का अध्ययन किया। आप 'कर्मवीर' राष्ट्रीय दैनिक के संपादक थे। आपने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। आपका एक और उपनाम 'एक भारतीय आत्मा' है। राष्ट्रियता माखन लाल चतुर्वेदी के काव्य का कलेवर है तथा रहस्यात्मक प्रेम उसकी आत्मा है।



**“चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ ॥
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर, हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ ॥
मुझे तोड़ लेना वनमाली।
उस पथ पर देना तुम फेंक ॥
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने।
जिस पथ जावें वीर अनेक ॥”**

इनका परिवार राधावल्लभ सम्प्रदाय का अनुयायी था, इसलिए स्वभावतः चतुर्वेदी के व्यक्तित्व में वैष्णव पद कण्ठस्थ हो गये। इनके पिता का नाम नंदलाल चतुर्वेदी था जो गाँव के प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक थे। प्राथमिक शिक्षा के बाद घर पर ही इन्होंने संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी, गुजराती आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। मात्र 16 वर्ष की आयु में वह शिक्षक बने।

हिन्दी काव्य प्रेमी माखनलाल जी की कविताएँ पढ़कर सहसा आश्चर्य चकित रह जाते हैं। उनकी कविताओं में कहीं ज्वालामुखी की तरह धधकता हुआ अंतर्मन, जो विषमता की समूची अग्नि सीने में दबाये फूटने के लिए मचल रहा है, कहीं विराट पौरुष की हुंकार तो कहीं करुणा की अजीब दर्द भरी मनुहार है। वे जब आक्रोश से उद्दीप्त होते हैं तो प्रलयंकर रूप धारण कर लेते हैं किंतु दूसरे ही क्षण वे अपनी कातरता से विह्वल होकर मनमोहक रूप धारण कर लेते हैं। चतुर्वेदी जी के व्यक्तित्व में तत्कालीन भारतीय समाज की सारी विरोधी अथवा विरोधी जैसी प्रतीत होने वाली विशिष्टताओं का एकत्रित भाव दिखायी पड़ता है। उनकी कविताओं में देशप्रेम के साथ-साथ प्रकृति और प्रेम का भी चित्रण हुआ है, इसलिए वे सच्चे अर्थों में युग-चारण माने जाते हैं।

नाम	पंडित माखन लाल चतुर्वेदी
जन्म	4 अप्रैल, 1889 ई. बावई, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश में
मृत्यु	30 जनवरी, 1968 ई. भोपाल में
प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ	हिमकिरीटिनी, हिम तरंगिणी, युग चारण, समर्पण, मरण ज्वार, माता, वेणु लो गूंजे धरा, बीजुरी काजल आँज रही
प्रसिद्ध गद्यात्मक कृतियाँ	कृष्णार्जुन युद्ध, साहित्य के देवता, समय के पाँव, अमीर इरादे : गरीब इरादे
पुरस्कार	साहित्य अकादमी पुरस्कार (1955 ई.), पद्म भूषण (1963 ई.)
रचना-समग्र	निराला रचनावली (संपादक- नन्दकिशोर नवल; राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली से प्रकाशित।)

नहीं कूची



कोयल विश्वास
पुत्री - गोलक चन्द्र विश्वास



अयांक प्रसाद
पुत्र - अनिश प्रसाद भारती



दिवेन्दु दास
पुत्र - देवासु दास



तनिशा कनौजिया
पुत्री - शिवलाल कनौजिया

मेट्रो चेतना



विद्यासागर सेतु का सायंकालीन भव्य दृश्य



मेट्रो रेल के ऑरेंज लाइन पर नवउद्घाटित मेट्रो स्टेशन हेमंत मुखोपाध्याय